श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, 22 वर्ष, अंक 201, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 20 अगस्त 2023

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

अयोध्या में श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा मिले: योगी

अयोध्या में हो रहे निर्माण कार्यों को समय सारिणी के अनुसार पूरा करें- मुख्यमंत्री

अयोध्याः मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सरयू होटल में अयोध्या में चले विकास कार्यों की समीक्षा बैठक की। मण्डलायुक्त, जिलाधिकारी, नगर आयुक्त आदि वरिष्ठ अधिकारियों के साथ अयोध्या में चल रहे निर्माण कार्यो के प्रगति की जानकारी उन्होंने ली। जिसमें संक्षिप्त विवरण मण्डलायुक्त ने प्रस्तुत किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि जो भी निर्माण कार्य चल रहे हैं, उन्हें निश्चित समय सीमा के अन्दर गुणवत्ता के साथ पूरा किया जाय। आगामी दीपोत्सव को देखते हुये तैयारियां की जाए। अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा मिले।

दिगम्बर अखाड़ा में आयोजित महंती कार्यक्रम में शामिल हुए मुख्यमंत्री

इससे पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दिगम्बर अखाड़ा में पहुंचकर वहां के मंदिर में पूजा की व साकेतवासी महंत परमहंस की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। मुख्यमंत्री वहां दिगम्बर अखाड़े के प्रमुख महंत सुरेश दास, नये महंत रामलखन दास के महंती समारोह में भी भाग लिया। उन्होंने गणमान्य पूज्य संतों से मुलाकात की जिसमें पूज्य संतों से मुलाकात के दौरान अयोध्या के विकास सम्बंधी बिन्दुओं की चर्चा की। इस मौके पर महंत धर्मदास, महंत अवधेश दास, मैथिलीशरण दास, भरत दास, वैदेही बल्लभ, रामदास, कमल नयन दास, कार्यक्रम के मुख्य आयोजक महंत सुरेश दास, महंत जयराम दास, महंत बलराम दास, आशुतोष दास सहित अन्य गणमान्य मौजूद रहे।

सीएम योगी ने रामलला के दरबार में पहुंचकर किया दर्शन-पूजन

अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को एक दिवसीय दौरे पर अयोध्या पहुंचे। राम कथा पार्क हेलीपैड से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सीधे रामचंद्र परमहंस दास की समाधि पर पहुंचे। यहां उन्होंने परमहंस की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद सीएम योगी ने श्रीराम जन्मभूमि पहुंचकर दर्शन-पूजन किया और देश-प्रदेशवासियों के कल्याण व सुख-समृद्धि की कामना की। रामलला के दर्शन के उपरांत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राम मंदिर निर्माण की प्रगति का हाल जाना। यहां श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने मुख्यमंत्री को मंदिर निर्माण से जुड़ी जानकारी दी। योगी आदित्यनाथ ने यहां कार्य कर रहे मजदूरों से भी बातचीत की। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से वर्तमान समय में चल रहे कार्य की प्रगति भी जानी। निरीक्षण के दौरान स्थानीय जनप्रतिनिधि भी मौजूद रहे।

10 प्रतिशत सीटें ईडब्ल्यूएस के लिए अनुमन्य

फॉर्मेसी पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रवेश क्षमतानुसार पीसीआई, नई दिल्ली से अनुमोदन प्राप्त होने पर ही प्रवेश लिया जाएगा। पीसीआई सर्कुलर के अनुसार फॉर्मेसी पाठ्यक्रम में पीसीआई द्वारा अनुमोदित प्रवेश क्षमता की 10 प्रतिशत सीटें ईडब्ल्यूएस के तहत प्रवेश के लिए अनुमन्य की गई हैं। फॉर्मेसी पाठ्यक्रम को छोड़कर अन्य पाठ्यक्रमों में एआईसीटीई सर्कुलर के अनुसार कुल प्रवेश क्षमता का 10 प्रतिशत सीटें ईडब्ल्यूएस प्रवेश

यूपी में 50 हजार युवाओं को मिलेगा पॉलीटेक्निक में प्रवेश

लखनऊ। योगी सरकार ने प्राविधिक शिक्षा निदेशालय के नियंत्रण वाले राजकीय एवं अनुदानित पॉलीटेक्निक संस्थाओं में संचालित होने वाले विभिन्न पाठ्यक्रमों में शैक्षिक सत्र 2023-24 के लिए प्रवेश क्षमता निर्धारित कर दी है। शासन की ओर से मिले अनुमोदन के अनुसार डिप्लोमा स्तरीय संस्थाओं के पाठ्यक्रमों में कुल 49778 अभ्यर्थी प्रवेश ले सकेंगे। सीटों की क्षमता का निर्धारण 2022-23 सत्र में प्रवेश क्षमता में विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों की रुचि को देखते हुए किया गया है। यही नहीं, निर्धारित सीटों पर प्रवेश में आरक्षण संबंधी नियमों का अनुपालन भी सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। इसके तहत सीटों में 10 प्रतिशत ईडब्ल्यूएस कोटा भी उपलब्ध होगा। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश के युवाओं का कौशल निखारकर उन्हें रोजगार से जोड़ने के लिए प्रयासरत योगी सरकार प्रति वर्ष हजारों युवाओं को पॉलीटेक्निक के माध्यम से विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित करती है। सरकार की मंशा छात्रों को उनके पसंदीदा पाठ्यक्रमों में प्रवेश देकर मनपसंद करियर चुनने के प्रति प्रोत्साहित करना है। एआईसीटीई का अनुमोदन जरूरी विगत वर्षों में देखा गया है कि कई पाठ्यक्रमों में युवाओं की ज्यादा दिलचस्पी रहती है, जबकि कुछ पाठ्यक्रमों में रुझान कम हुआ है।

असम हाउस, नई दिल्ली में तीन दिवसीय फूड फेस्टिवल शुरू

गुवाहाटी/नई दिल्ली। लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै मार्ग स्थित असम हाउस परिसर में असम के व्यंजनों को प्रदर्शित करने वाला तीन दिवसीय फूड फेस्टिवल चल रहा है। शुक्रवार को शुरू हुए इस महोत्सव का आयोजन असम पर्यटन द्वारा पर्यटन मंत्रालय और असम हाउस के रेजिडेंट कमिश्नर के कार्यालय के सहयोग से किया जा रहा है। इसमें हथकरघा और हस्तशिल्प उत्पादों को प्रदर्शित करने वाले स्टालों के अलावा असमिया व्यंजनों को प्रदर्शित करने वाले विभिन्न खाद्य स्टाल लगाए गए हैं। एक भारत श्रेष्ठ भारत खाद्य महोत्सव और आजादी का अमृत महोत्सव के हिस्से के रूप में इस महोत्सव का आयोजन पर्यटन मंत्रालय द्वारा विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के साथ साझेदारी में राज्य-विशिष्ट व्यंजनों को प्रदर्शित करने और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देने के साथ प्रत्येक क्षेत्र की विशिष्टता के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले राज्यों के उनके अपने राज्य भवनों या घरों में आयोजित किया जा रहा है। असम, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तराखंड, उड़ीसा, गुजरात, मिजोरम, पश्चिम बंगाल, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश, तमिलनाडु, गोवा, मेघालय, कर्नाटक, छत्तीसगढ़ और नगालैंड सहित कुल 23 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश इस आयोजन में भाग ले रहे हैं।

सरकार लाने वाली है एआई संचालित 'भाषिणी': पीएम मोदी

नई दिल्लीः पीएम नरेंद्र मोदी ने जी20 डिजिटल अर्थव्यवस्था मंत्रियों की बैठक को वर्चुअली संबोधित किया। अपने संबोधन में पीएम ने भारत के तेजी से होते डिजिटलीकरण की बात कही। पीएम ने कहा कि भारत में 85 करोड़ से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं, जो दुनिया में सबसे सस्ती डेटा लागत का आनंद ले रहे हैं। पीएम ने कहा कि हमने शासन को अधिक कुशल, समावेशी, तेज और पारदर्शी बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाया है

हम एआई-संचालित भाषा अनुवाद मंच 'भाषिणी' का निर्माण कर रहे हैं। यह भारत की सभी विविध भाषाओं में डिजिटल समावेशन का समर्थन करेगा। भारत का डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचा वैश्विक चुनौतियों के लिए स्केलेबल, सुरक्षित और समावेशी समाधान प्रदान करता है।

डिजिटल पेमेंट में भारत सबसे आगेः पीएम मोदी ने कहा कि डिजिटल पेमेंट में भी भारत सबसे आगे है। उन्होंने कहा कि वैश्विक रियल टाइम डिजिटल पेमेंट का 45 फीसद भारत में होता है। प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि देश में अब सरकारी सहायता का लाभ सीधा बैंक खाते में ट्रांसफर करने पर भ्रष्टाचार पर भी लगाम लगी है और इससे 33 बिलियन डॉलर से अधिक की बचत हुई है।

पंजाब पुलिस ने तस्करी रोकने को लेकर सीमावर्ती जिलों में चलाया ऑपरेशन सील-3

चंडीगढ़। पंजाब को अपराध मुक्त और नशा मुक्त राज्य बनाने के मद्देनजर पंजाब पुलिस ने शनिवार को एक विशेष ऑपरेशन 'ऑपरेशन सील-3' चलाया, जिसका उद्देश्य सरहदी राज्य में दाखिल होने वाले सभी वाहनों की चेकिंग करना था। इससे पंजाब में नशा तस्करी, शराब तस्करी और गैंगस्टरों और समाज विरोधी तत्वों की हरकतों पर पैनी नजर रखी जा सके। पुलिस महानिदेशक गौरव यादव ने बताया कि यह ऑपरेशन चार पड़ोसी राज्यों हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और जम्मू-कश्मीर और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ के पुलिस बलों के साथ सांझे तौर पर सुबह 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक सुनियोजित ढंग से एक ही समय चलाया गया। विशेष डीजीपी लॉ एंड आर्डर अर्पित शुक्ला ने बताया कि 10 जिले, जिनकी सीमाएं चार सरहदी राज्यों और यूटी चंडीगढ़ के साथ लगती हैं, के सभी एंट्री-एग्जिट प्वाइंटों पर इंस्पेक्टर/डीएसपी की निगरानी अधीन 1500 से अधिक पुलिस कर्मियों की तैनाती और बढ़िया तालमेल वाले नाके लगाए गए हैं।

गरीबों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही: ज्ञानचंद

यमुनानगर। गुरुद्वारा साहिब गोविंदपुरा भम्भौली के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता ने शनिवार को एक जरूरतमंद परिवार को पक्का मकान बनाकर सौंपा। इस समारोह में उन्होंने जरूरत मंदों को पक्का मकान बनाकर देने वाले बाबा जसदीप सिंह की अगुवाई में सेवा कर रही संगत को 11 लाख रुपये देने की घोषणा की। यह राशि जरूरतमंद परिवारों को सहायता के लिए खर्च की जाएगी।

महिंद्रा ने वायरिंग में दिक्कत आने पर एक लाख से ज्यादा कारें वापस मंगाई

नई दिल्ली। कार निमार्ता कंपनी महिंद्रा एंड महिंद्रा (एमएंडएम) ने अपनी करीब एक लाख से ज्यादा कारों को वापस मंगा लिया है। एमएंडएम ने अपने स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल (एसयूवी) एक्सयूवी700 के इंजन में वायरिंग (तार) संबंधी दिक्कत का परीक्षण करने के लिए 1,08,306 गाड़ियां वापस मंगाई हैं। कंपनी ने शनिवार को शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि उसने आठ जून, 2021 से 28 जून, 2023 तक बनीं 1,08,306 एक्सयूवी700 के इंजन में तारों का परीक्षण करने के लिए वापस मंगाया है। कंपनी ने वायरिंग में घर्षण से कट लगने के संभावित खतरे के चलते यह कदम उठाया है। एमएंडएम ने कहा कि साथ ही 16 फरवरी, 2023 से पांच जून 2023 तक बनीं 3,560 एक्सयूवी400 का भी परीक्षण किया जाएगा। कंपनी ने एक बयान में कहा कि सभी ग्राहकों के लिए निरीक्षण और उसके बाद सुधार का काम निःशुल्क किया जाएगा। ग्राहकों से कंपनी द्वारा व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया जाएगा।

कोटा सुसाइड मामलों पर एक्शन में गहलोत

सरकार, पंखे पर एंटी हैंगिंग डिवाइस नहीं लगाने वाले हॉस्टल होंगे सीज

जयपुरः देश में कोचिंग हब के रूप में प्रसिद्ध राजस्थान के कोटा में छात्र-छात्राओं की आत्महत्या के बढ़ते मामलों से चिंतित राज्य सरकार ने अब कोचिंग संस्थानों और निजी हॉस्टल संचालकों पर सख्ती करने का निर्णय लिया है।

कोचिंग संस्थानों को भी कई सख्त निर्देश

कोचिंग संस्थानों को रविवार का टेस्ट बंद करने और छात्र-छात्राओं पर पढ़ाई का अधिक बोझ नहीं डालने के लिए कहा गया है। अब कोचिंग संस्थानों और हॉस्टल संचालकों को अपने यहां प्रत्येक 15 दिन में छात्र-छात्राओं का मनोचिकित्सक से परीक्षण करवाना होगा। साथ ही कोचिंग संचालकों निर्देश दिए गए हैं पैसे कमाने के लालच में वे छात्र-छात्राओं को स्कूलों में डमी प्रवेश नहीं दिलवाएं। कोटा के सभी हॉस्टल में पंखों पर एंटी हैंगिंग डिवाइस लगाए जाएंगे । एंटी हैंगिंग डिवाइस नहीं लगाने वाले हॉस्टल को सीज किया जाएगा। हॉस्टल संचालकों के खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट भी दर्ज होगी।

1984 सिख विरोधी दंगा: सज्जन कुमार के खिलाफ 23 अगस्त को तय होंगे आरोप

नई दिल्लीः दिल्ली के राऊज एवेन्यू कोर्ट ने 1984 सिख विरोधी दंगा मामले में सज्जन कुमार के खिलाफ आरोप तय करने पर फैसला टाल दिया है। स्पेशल जज एमके नागपाल के उपलब्ध नहीं होने की वजह से सुनवाई टली। कोर्ट ने 23 अगस्त को फैसला सुनाने का आदेश दिया। मामला जनकपुरी का है। दरअसल 1984 में सिख विरोधी दंगे के दौरान जनकपुरी में दो सिखों सोहन सिंह और उनके दामाद अवतार सिंह की 1 नवंबर को हत्या हुई थी जबकि विकासपुरी पुलिस स्टेशन के इलाके में गुरुचरण सिंह को जला दिया गया, जिसकी वजह से उनकी मौत हुई थी। दोनों मामलों में 2015 में एसआईटी ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। इसके लिए मई 2018 में सज्जन कुमार का पॉलीग्राफ टेस्ट भी किया जा चुका है।

मणिपुर: नागाओं के गढ़ तक पहुंची हिंसा की आग

इंफालः मणिपुर में हिंसा की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार, राज्य में बफर जोन बनाने के बाद भी रुक-रुक कर हिंसा देखने को मिली है। अब हिंसा नागा समुदाय के गढ़ तक पहुंच गई है। मणिपुर के उखरूल जिले में शुक्रवार तड़के गोलीबारी की घटना सामने आई है। भारी हथियारों से लैस लोगों के एक समूह ने उखरूल जिले में कुकी के तीन ग्रामीणों को प्रताड़ित किया और गोली मार दी, जिससे 5 अगस्त को हुई आखिरी हिंसा की घटना के बाद से दो सप्ताह की शांति खत्म हो गई।

नागा बहुल जिले में हिंसा की पहली घटना

तांगखुल नागा बहुल जिले में हिंसा की यह पहली घटना है, जो मणिपुर में अब तक सांप्रदायिक हिंसा से अछूता था। जब उन पर हमला हुआ तो पीड़ित अपने गांव थोवई की रखवाली कर रहे थे। पुलिस को जांच में तीन क्षत-विक्षत शव मिले, जिनपर तेज चाकूओं से वार के निशान थे।

चिंताजनक है नागा समुदाय पर हमला

ये घटना काफी चिंताजनक है। ऐसा इसलिए, क्योंकि मणिपुर में नागा अब तक कुकी और मैतेई के बीच चल रहे संघर्ष में तटस्थ रहे हैं। नागा समुदाय पर हमला होने के बाद हिंसा फिर छिड़ने का खतरा हो सकता है।

एक खूनी इतिहास

इससे पहले 1990 के दशक में नागाओं और कुकी के बीच हिंसक झड़पें देखी गईं थी, जिनमें सैकड़ों लोग मारे गए। उस समय संघर्ष मुख्य रूप से भूमि को लेकर था। मणिपुर की पहाड़ियों में कुकी अपनी "मातृभूमि" होने का दावा करते हैं, उसका बड़ा हिस्सा ग्रेटर नागालैंड या नागालिम के साथ ओवरलैप हो गया।

सुप्रीम कोर्ट ने 16-18 साल की उम्र में सहमति से यौन संबंध को चुनौती देने वाली याचिका पर केंद्र से मांगा जवाब

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने 16 से 18 साल की उम्र के बीच सहमति से यौन संबंध को अपराध मानने वाले वैधानिक दुष्कर्म कानूनों को चुनौती देने वाली याचिका पर केंद्र को नोटिस जारी किया है। भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की अध्यक्षता वाली पीठ ने केंद्र को नोटिस जारी कर याचिका पर जवाब देने को कहा।

किसने दायर की याचिका?

याचिकाकर्ता हर्ष विभोर सिंघल एक वकील हैं। उन्होंने अपनी जनहित याचिका में वैधानिक दुष्कर्म कानूनों को चुनौती दी है, जो शारीरिक, जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक क्षमता रखने वाले 16 से 18 साल के बच्चों के बीच सहमति से यौन संबंध बनाने को अपराध मानते हैं।

किशोरों के खिलाफ आपराधिक प्रतिबंध अनुचित

याचिका में कहा गया है कि यह याचिकाकर्ता का मानना है कि सहमति से गैर-शोषणकारी यौन गतिविधि के लिए किशोरों के खिलाफ आपराधिक प्रतिबंध अनुचित हैं। 18 वर्ष से कम उम्र के व्यक्तियों से जुड़ा यौन संबंध वास्तव में सहमति से हो सकता है, भले ही कानून में न हो। इसलिए, आपराधिक कानून को लागू करने से ऐसे व्यक्तियों के अधिकारों और क्षमता को प्रतिबिंबित करना चाहिए, ताकि वे सहमति से यौन संबंध बनाने के बारे में निर्णय ले सकें।

समाधान दिवस में अधिशाषी अभियंता विद्युत एवं सहायक अहलमद का वेतन रोकने के निर्देश

संपूर्ण समाधान दिवस हण्डिया : जिलाधिकारी ने समाधान दिवस में आयी शिकायतों को गुणवत्तापूर्वक एवं समयबद्धता के साथ निस्तारित करने के दिए निर्देश, अभियान चलाकर चकमार्गो से अवैध कब्जों को कराया जायेगा मुक्त, शिकायतों के निस्तारण में विलम्ब होने पर सम्बंधित के खिलाफ की जायेगी कड़ी कार्रवाई : डीएम

कुल 506 प्रकरण सुनवाई के लिए आए, 32 प्रकरणों का मौके पर किया गया निस्तारण

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में शनिवार को तहसील हण्डिया में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। समाधान दिवस में अधिशाषी अभियंता विद्युत के अनुपस्थित रहने एवं गायब हुई चार पत्रावलियों के बारे में सही जवाब न दे पाने पर सहायक अहलमद अजय गौतम का वेतन रोके जाने का निर्देश दिया है। समाधान दिवस में 70 वर्षीय वृद्ध महिला प्रेमा देवी के द्वारा निवास हेतु जमीन व आवास दिए जाने से सम्बंधित आवेदन पत्र दिए जाने पर जिलाधिकारी ने तहसीलदार हण्डिया एवं परियोजना निदेशक को आवेदन पत्र पर नियमानुसार कार्यवाही करते हुए उन्हें जमीन व आवास उपलब्ध कराये जाने के लिए कहा है साथ ही साथ उन्होंने कृतकार्यवाही से एक सप्ताह में अवगत कराने के लिए भी कहा है। समाधान दिवस में सर्वप्रथम जिलाधिकारी ने कहा कि प्रत्येक शिकायतकर्ता के साथ उनके क्षेत्र के अमीन व लेखपाल उपस्थित रहे। जिलाधिकारी ने राजस्व निरीक्षकों से सम्बंधित प्रार्थनापत्रों की अलग-अलग सूची बनाकर सम्बंधित राजस्व निरीक्षकों को आज ही प्रकरणों की जांच कर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने चकमार्गो को अवैध कब्जों से मुक्त कराने के लिए अभियान चलाये जाने के लिए कहा है। उन्होंने विद्युत बिल में अनियमित्ता से सम्बंधित शिकायतों को निस्तारित करने हेतु विद्युत विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया है। जिलाधिकारी ने राजस्व, पुलिस, स्वास्थ्य एवं अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को प्रकरण की जांच कर शिकायतों को गुणवत्तापूर्वक एवं समयबद्धता के साथ निस्तारित करने एवं प्रार्थनापत्रों की समयबद्ध जांच, कार्रवाई एवं समस्याओं के निस्तारण में विलम्ब होने पर सम्बंधित अधिकारी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि जन-शिकायतों का निस्तारण समय पर किया जाना शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता वाले बिंदुओं में से एक है, इसलिए इसमें किसी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता नहीं होनी चाहिए। सम्पूर्ण समाधान दिवस पर कुल 506 शिकायतें प्राप्त हुई, जिनमें से 32 शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया।तहसील समाधान दिवस में रामकुमार पुत्र स्व0 हरिकेश के द्वारा राम प्रसाद व किशोरी लाल के द्वारा सरकारी चक मार्ग संख्या 160 पर तीन फुट ऊंची दीवाल बनाकर कब्जा किए जाने की शिकायत की गयी, जिसपर जिलाधिकारी ने एसडीएम हण्डिया को मौके पर जाकर जांच कर कब्जा मुक्त कराने के लिए कहा है। समाधान दिवस में अनीता देवी पत्नी राजेश कुमार के द्वारा उनके साथ हुई मारपीट की एफआईआर न दर्ज किए जाने की शिकायत पर जिलाधिकारी ने एसीपी हण्डिया को प्रकरण की जांच कर एफआईआर दर्ज करवाने के लिए कहा है। समाधान दिवस में अभयराज पुत्र हीरालाल निवासी चकिया चंदोपारा के द्वारा बनाये गये चकमार्ग की कटाई कर कब्जा किए जाने की शिकायत की गयी, जिसपर जिलाधिकारी ने तहसीलदार हण्डिया को चक मार्ग का सीमांकन कराकर अवैध अतिक्रमण को मुक्त कराये जाने के लिए कहा है। सोनी देवी निवासी ग्राम भगौतीपुर ने रमाकांत निवासी उपरदहा के द्वारा जमीन की बिक्री हेतु 7.5 लाख रू0 लेने के पश्चात जमीन की रजिस्ट्री नहीं करने एवं उनके द्वारा दिए गए पैसे वापस नहीं किए तथा उनके साथ गुण्डई व दबंगई किए जाने की शिकायत की गयी, जिसपर जिलाधिकारी ने एसओ हण्डिया को प्रकरण की जांच कर आवश्यक कार्यवाही करने के लिए कहा है। प्रार्थिनी राजकली निवासी सरॉय इनायत के द्वारा उनकी पुत्री की श्रम विभाग के द्वारा आयोजित सामुदायिक शादी समारोह में होने के पश्चात अनुदान राशि प्राप्त कराने के लिए प्रार्थना पत्र दिया, जिसपर जिलाधिकारी ने उप श्रमायुक्त को अनुदान राशि प्राप्त कराने के लिए निर्देशित किया है। जिलाधिकारी ने परियोजना निदेशक अशोक कुमार मौर्या को आवास से सम्बंधित शिकायतों का निस्तारण कराये जाने हेतु निर्देशित किया है। उन्होंने उपजिलाधिकारी हण्डिया को चक मार्गों से अतिक्रमण हटवाने, खतौनी के वरासत की फीडिंग समय से कराये जाने, ठीक ढंग से फाईलों के रख-रखाव व तहसील परिसर में लगे आर0ओ0 सिस्टम की मरम्मत कराकर चालू कराये जाने तथा तहसील परिसर को साफ-सुथरा बनाये रखने का निर्देश दिया है। उन्होंने अधिशाषी अधिकारी हण्डिया को निमार्णाधीन शौचालयों के कार्य को जल्द से जल्द पूरा कराये जाने, पुराने शौचालयों की नियमित साफ-सफाई कराने तथा तहसील परिसर के सामने खुली नाली को ढकने का कार्य कराये जाने के लिए कहा है। जिलाधिकारी ने तहसील बार एसोसिएशन के अध्यक्ष व अन्य पदाधिकारी अधिवक्ताओं से मिलकर उनके सुझाव प्राप्त किए एवं समस्याओं को सुना तथा उनके निस्तारण के बारे में अधिवक्ताओं को आश्वस्त किया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, सीएमओ आशु पाण्डेय, एसडीएम हण्डिया, तहसीलदार हण्डिया, जिला विकास अधिकारी भोलानाथ कनौजिया, परियोजना निदेशक ए0के0 मौर्या, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रवीण तिवारी, जिला पंचायतराज अधिकारी सहित अन्य सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

खाद्यान्न वितरण में घटतौली से कार्ड धारकों में रोष

कोरांव। सार्वजनिक वितरण में उचित दर विक्रेताओं द्वारा कार्ड धारकों के साथ नाइंसाफी की शिकायत की है। ग्राम पंचायत अल्हवा तहसील कोरांव में ग्राम अल्हवा के कोटेदार द्वारा खाद्यान वितरण में 25 किलो ग्राम के बजाय 21 किलो ग्राम खाद्यान्न दिया जा रहा है। चर्चा है कि कोटा कई माह से निलंबित था,जैसे ही पैसे खर्च कर बहाल कराया तो कार्ड धारकों से वसूली की जा रही है। एक महिला कार्ड धारक ने सीएम हेल्प लाइन पर खाद्यान्न कम दिए जानें की शिकायत दर्ज कराई है। और समाधान दिवस कोरांव में भी कोटेदार अल्हवा के विरुद्ध शिकायत दर्ज कराई है। और विधिक कार्यवाही की मांग की। इसी तरह गांव के

समाधान और सीएम हेल्प लाइन में हुई शिकायत

काफी कार्ड धारक खाद्यान्न कम मिलने के कारण अक्रोशित हैं। बता दें की उक्त कोटेदार की तीन बार प्रतिभूति जब्त की जा चुकी है और दुकान निलंबित भी हुई है। विक्रेता जेल भी गया था।न्यायालय में केस चल रहा है । फिर भी बहाल कर दी गई। इसकी शिकायत कार्ड धारक जिन लोगों के बयान साक्ष्य के अनुसार दुकान निलंबित थी निरस्तीकरण की कार्यवाही न करके बिन कार्ड धारकों के बयान के दुकान बहाल की गई जिसकी शिकायत शासन से और सक्षम न्यायालय से जनहित में याचिका दाखिल की जाएगी।

श्री नाथ इंटर कॉलेज मे निबंध लेखन प्रतियोगिता आज

मेजा। मेजा क्षेत्र के खानपुर मे स्थित श्री नाथ तिवारी इंटर कॉलेज मे 20 अगस्त को लोकहित ट्रस्ट के संचालक प्रकाश चन्द्र जुगमंदर दास अग्रवाल की अध्यक्षता में हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है उक्त आशय की जानकारी विद्यालय के प्रबन्धक तथा अखिल भारतीय वित्तविहीन के प्रदेश अध्यक्ष पंकज तिवारी ने देते हुए बताया कि इस प्रतियोगिता मे यमुनापार के कक्षा 9 व 10 मे शिक्षारत छात्र छात्राए भाग लेंगे निबंध प्रतियोगिता में छात्र छात्राए अपने गांव के लिए क्या करना चाहेंगे अथवा गांव की स्वावलंबी अर्थ व्यवस्था पर आधारित होगी तथा 500 सौ शब्दो का होना अनिवार्य बताया गया है। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रथम व द्वितीय तथा स्थान पाने वाले प्रतियोगी छात्र छात्राओं को पुरस्कृत किया जायेगा। जिसमे कक्षा 11 व 12 के तीन प्रतियोगी छात्र छात्राओं को प्रति प्रतियोगी 1000 रू प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। उन्होंने बताया कि निबंध का विषय लोक भाषाओं का हिंदी के विकास का योगदान अथवा मध्यकालीन साहित्य में पारंपरिकता जो एक हजार शब्दो की होगी। इसमें प्रथम व द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वाले छात्र छात्राओं को क्रमश सात हजार, छः हजार, तथा चार हजार रुपया बतौर पुरस्कार दिया जाएगा । प्रोत्साहन राशि तीन प्रतियोगियों को दो हजार रुपया प्रति प्रतियोगी को दिया जाएगा। उन्होंने यमुनापार के सभी विद्यालयों के प्रबन्धक/ प्रधानाचार्यों को अपने अपने स्कूल के छात्र छात्राओं से प्रतियोगिता भाग लेने की अपील किया है।

जिला अधिवक्ता पर प्राण घातक हमला रुपये लूटकर फरार

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा के ग्राम बसदेया पुलिया पर देर रात बैठे बदमाशों ने दिया अंजाम

मऊआइमा। मऊआइमा इलाके के बस देइया के पुलिया पर जिला कचहरी से वापस साइकिल से घर जा रहे अधिवक्ता पर देर रात में बदमाशों ने लोहे की राड से सिर पर मार कर प्राण घातक हमला कर बेहोश कर दिया गया और पैसा लूट कर भाग गए। पुलिस दो नामजद पांच अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम बसदेया निवासी अमृतलाल पुत्र स्वर्गीय पवन कुमार पेशे से अधिवक्ता हैं। बताया गया है कि वह रोज गांव से साइकिल से आते है ।और साइकिल थाना चौराहे पर खडी कर-के वाहन द्वारा जिला कचहरी प्रैक्टिस करने जाते है हर रोज इसी तरह ही आते जाते हैं। बताया गया है कि शुक्रवार को अधिवक्ता अमृल लाल को देरी हो गई वह साइकिल से घर जा रहे थे। बताया गया है कि जैसे वह बसदेया(बाहवा)पुलिया पर पहुंचें पहले से घात लगाकर बैठे बदमाशों ने लोहे की राड से सिर पर प्राण घातक हमला कर दिए। जिससे अमृल लाल बेहोश हो गए। बताया गया है कि बदमाशो ने मरा हुआ समझ कर जेब में रखा साढे सात सौ रुपये लूट कर भाग गए। सूचना पर परिजन पहुंचे पुलिस को सूचना देते हुए अस्पताल में भर्ती करा दिया है। पुलिस ने अधिवक्ता की तहरीर पर ग्राम देवगलपुर निवासी प्रांजल, शांजल पुत्रगण राम मूरत तथा चार पांच अज्ञातों के खिलाफ लूट तथा पीट कर बेहोश करने का मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस आरोपियों के घर दबिश दे रही है।

20वीं बार संपूर्ण समाधान दिवस में शिकायत करने पहुंचे सुखलाल

अखंड भारत संदेश

समाधान दिवस में ग्राम पंचायत अल्हवा द्वारा एसीपी मेजा हुए सम्मानित

कोरांव। संपूर्ण समाधान दिवस में आने वाले फरियादियों की शिकायतों को समयबद्ध तरीके से गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने के भले ही सरकार द्वारा कड़े निर्देश दिए गए हों लेकिन जमीनी हकीकत इससे ईतर ही देखी जा रही है। संपूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में जिम्मेदार अधिकारी महज खाना पूर्ति कर अपने कार्य से इतिश्री कर ले रहे हैं। जिससे एक ही फरियादी बार-बार समाधान दिवसों में शिकायत करने को विवश रहते हैं। तहसील क्षेत्र के खजुरी खुर्द गांव के रहने वाले सुखलाल विश्वकर्मा ने शनिवार को 20वीं बार संपूर्ण समाधान दिवस में अपना शिकायती पत्र प्रस्तुत किया लेकिन निस्तारण नहीं हो सका। इसी प्रकार जमुआ गांव के रहने वाले जगदीश प्रसाद ने बताया कि चक मार्ग पर अवैध अतिक्रमण करने की शिकायत मैं 5 बार समाधान दिवस में कर चुका लेकिन अभी तक चक मार्ग पर हुए अतिक्रमण को खाली नहीं कराया जा सका। इतना ही नहीं ग्राम पंचायत हलहवा में ग्राम प्रधान द्वारा सीमांकित जमीन पर उचित दर विक्रेता द्वारा धान की रोपाई करने की शिकायत संपूर्ण समाधान दिवस में दर्ज कराई गई। हलवा उचित दर विक्रेता द्वारा 25 किलो खाद्यान्न की जगह 21 किलो खाद्यान्न देने की शिकायत गांव की ही सूर्य कली पाल द्वारा 1076 एवं संपूर्ण समाधान दिवस में शिकायत दर्ज कराई है। समाधान दिवस में कुल 252 फरियादियों ने अपनी शिकायतें दर्ज कराई जिसमें सात शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया। शेष शिकायतों के निस्तारण के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को निर्देशित कर दिया गया। संपूर्ण समाधान दिवस में ग्राम पंचायत अलहवा के ग्राम प्रधान व मिस्कीन सेवा संस्थान ट्रस्ट के प्रबंधक अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे पत्रकार ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सराहनीय एवं उत्कृष्ट सेवाओं के लिए अपर पुलिस आयुक्त मेजा विमल किशोर मिश्र को सम्मान पत्र देकर समाधान दिवस सभागार में उपजिला मजिस्ट्रेट अविनाश सिंह यादव के हाथों द्वारा सम्मानित भी किया गया। एसीपी मेजा को सम्मान पत्र देने के दौरान जनपद के कई अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

राज्यपाल लक्ष्मण आचार्य का सहसों में हुआ भव्य स्वागत

अखंड भारत संदेश

सहसों। सिक्किम प्रदेश के राज्यपाल लक्ष्मण आचार्य का राज्यपाल बनने के बाद सहसों में प्रथम आगमन पर जिला कोषाध्यक्ष भाजपा गंगापार आशीष केसरवानी एवं भाजपा कार्यकताओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर सहसों के कसेरूआ कला स्थित आशीष केसरवानी के आवास पर पहुंचकर महामहिम राज्यपाल ने सभी का अभिवादन स्वीकार करते हुए शिवजी की पूजन और आरती में शामिल हुए तथा भाजपा कार्यकताओं, पदाधिकारी एवं क्षेत्रीय गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात कर कहा कि सहसों क्षेत्र से हमारा बहुत ही गहरा नाता है। उनके स्वागत में आयोजित सहभोज में उपस्थित क्षेत्रीय जनमानस से परिचयात्मक हालचाल लेते हुए ईमानदारी, सत्य, निष्ठा से संगठन के प्रति समर्पण का मूल मंत्र दिया। इस अवसर पर भारी संख्या में गणमान्य व्यक्तियों ने उनके साथ सहभोज में शामिल होकर अपने आपको गौरवान्वित महसूस किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक दीपक पटेल, विधान परिषद सदस्य सुरेंद्र चौधरी, चेयरमैन फूलपुर अमरनाथ यादव, जिला अध्यक्ष अश्विनी कुमार द्विवेदी, पूर्व जिला अध्यक्ष भाजपा गंगापार अमरनाथ तिवारी, जिला उपाध्यक्ष भाजपा गंगापार अनिरुद्ध सिंह पटेल, प्रमुख बहादुरपुर डब्बू यादव, प्रमुख बहरिया शशांक मिश्रा, पूर्व जिला उपाध्यक्ष भाजपा गंगापार व भूमि विकास बैंक अध्यक्ष फूलपुर वीरेंद्र बहादुर सिंह, महामंत्री मनोज निषाद, भाजपा नेता चन्द्रेश केसरवानी, मनीष केसरवानी, नितिन केसरवानी, सतीश केसरवानी, सत्यम केसरवानी, इंजीनियर बद्री प्रसाद सिंह, डॉ प्रमोद कुमार गुप्ता आदि मौजूद रहे।

पुरानी रंजिश को लेकर मार पीट व तोड़फोड़ 6 पर केस दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र के हरक पुर गांव में पुरानी रंजिश को लेकर घर में घुस कर तोडफोड जान से मारने की धमकी देने और कई को पीट कर जख्मी कर देने पर पुलिस ने आधा दर्जन नामजद चार महिएं अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। मऊआइमा के हरखपुर गांव निवासी कमला देवी पत्नी सत्यवीर यादव का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर गांव के कतिपय लोग हाथों में लाठी डंडा लेकर घर में घुस कर तोडफोड किए तथा कई को मार पीट कर जख्मी कर दिए। कमला देवी ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर गांव के ही हरिश्चन्द्र, रामजी, पंकज कुमार, सौरभ कुमार, करन , इन्द्रेश तथा चार महिएं अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है।

संपूर्ण समाधान दिवस में 231 शिकायतें मिली

अखंड भारत संदेश

मेजा। संपूर्ण समाधान दिवस मेजा में एसडीएम ने समस्याओं और शिकायतों को लेकर विभिन्न विभागों के अधिकारियों को आगाह किया कि समस्याओं को लटकाएं नहीं बल्कि समयबद्ध ढंग से उनका गुणवत्तापूर्ण समाधान करें ताकि पीड़ितों को एक ही समस्या के लिए बार-बार तहसील तक न दौड़ना पड़े। अगस्त महीने के तृतीय शनिवार को तहसील सभागार में एसडीएम अमित कुमार गुप्ता की अध्यक्षता में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न विभागों से जुड़ी कुल 231 शिकायतें दर्ज की गईं, इनमें मौके पर एक भी शिकायतों का निस्तारण नहीं किया जा सका।गत संपूर्ण समाधान दिवस में भी मौके पर निस्तारण नहीं किया जा सका था।इस दौरान फरियादियों द्वारा पुलिस से 63 , राजस्व से 85, विकास 22,समाज कल्याण से 2 और अन्य से 59 शिकायतें दर्ज कराई गईं।शिकायतों के क्रम में गोसौरा खुर्द के निवासियों ने जिला पंचायत के नाम से की जा रही अवैध वसूली का आरोप लगाते हुए मामले के निस्तारण करने की गुहार लगाई है। इन शिकायतों का निर्धारित समय सीमा के अंदर गुणवत्ता के साथ मौके पर जाकर निस्तारण किए जाने हेतु संबंधित विभागों के अधिकारियों को एसडीएम ने निर्देशित करते हुए कहा कि शिकायतों के निस्तारण में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।सभी संबंधित अधिकारी निस्तारण किए जाने की सूचना शिकायतकर्ता को अवश्य उपलब्ध कराएं। इस दौरान नायब तहसीलदार लालतारा राजेंद्र सिंह,नायब तहसीलदार मांडा सुलभ तिवारी,बीडीओ उरुवा, संबंधित थानों के प्रभारी निरीक्षक, सीडीपीओ रागिनी कौशिक समेत अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।वहीं कई विभाग के अधिकारी नदारद रहे। पूरे सम्पूर्ण समाधान दिवस तक अधिकारियों में लापरवाही बनी रही। औपचारिकताएं पूरी की गईं।

लालापुर पुलिस ने तीन चोरों को किया गिरफ्तार

चोरी के 3 मोबाइल व 4 ट्रैक्टर की बैटरी बरामद किया बरामद

लालापुर। थाना लालापुर क्षेत्र में इन दिनों लगातार चोरी की घटनाएं हो रही थी, जिसकी शिकायत ग्रामीणों द्वारा लगातार लालापुर थाने में की जा रही थी। बेखौफ चोरों को पकड़ने के लिए लालापुर थाना प्रभारी अजय मिश्रा ने अपने मुखबिर तंत्र को मजबूत करते हुए शनिवार को 03 शातिर चोरों को गिरफ्तार करते हुए क्षेत्र में घटित चोरी की घटनाओं का सफल अनावरण किया.....।गिरफ्तार चोर... वीरू कुमार पुत्र राम बाबू हरिजन, आनन्द कुमार हरिजन पुत्र कमलेश कुमार व रवि कुमार पुत्र सुरेश कुमार हरिजन निवासीगण ग्राम मंदुरी, थाना लालापुर, जनपद प्रयागराज के निवासी हैं। चोरों के कब्जे से चोरी के 03 मोबाइल व 04 ट्रैक्टर की बैटरी बरामद की गयी । बता दें कि लालापुर थानाध्यक्ष अजय मिश्रा द्वारा लगातार अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध ताबड़तोड़ कार्रवाई की जा रही है, जिससे हड़कंप मचा हुआ है।लालापुर थानाध्यक्ष अजय मिश्रा ने मीडिया को जानकारी देते हुए कहा कि थाना क्षेत्र में अपराधियों को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा, लोगों को डरने की जरूरत नहीं है।अगर किसी व्यक्ति को कोई दिक्कत या परेशानी है तो निः संकोच हमसे संपर्क कर सकता है।

अखंड भारत के टुकड़े-टुकड़े कर बनाए गए 24 देश : दिवाकर

विहिप, बजरंग दल के बैनर तले अखंड भारत संकल्प दिवस का आयोजन

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल के द्वारा शनिवार को अखंड भारत संकल्प दिवस मनाया गया। नगर पंचायत शंकरगढ़ नगर के सागर गेस्ट हाउस में आयोजत अखंड भारत संकल्प दिवस का शुभारंभ भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। बतौर चीफ गेस्ट व मुख्य वक्ता के रूप में विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल के लखनऊ क्षेत्र के सत्संग प्रमुख दिवाकर ने कहा कि वर्मा, अफगानिस्तान, भूटान, तिब्बत, श्रीलंका, पाकिस्तान आदि कुल मिलाकर 24 देशों का निर्माण भारत माता को खंडित करके किया गया। 1947 के बंटवारे में सबसे ज्यादा नुकसान पाकिस्तान में रहने वाले हिंदुओं का हुआ। पार्टिशन में हजारों हिंदुओं का नरसंहार किया गया। कार्यक्रम का संचालन नगर अध्यक्ष सुजीत केसरवानी ने किया। संयोजक नगर अध्यक्ष एवं प्रखंड अध्यक्ष विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल शंकरगढ़ रहे। कार्यक्रम में मुख्य रूप से विभाग संयोजक अंशुमान, विभाग सहसंयोजक अमित, एकल विद्यालय के विभाग उपाध्यक्ष शिवराम सिंह परिहार, जिला संयोजक सुशील सिंह, जिला प्रचार प्रमुख राम सिंह कबीर, जिला उपाध्यक्ष रवि तिवारी, जिला मंत्री विनोद दुबे, जिला समरसता प्रमुख धर्मेंद्र दुबे, आदर्श दुबे, शुभम पांडेय, जय सिंह, नगर पंचायत शंकरगढ़ के चेयरमैन प्रतिनिधि छेदीलाल कोटार्य, व्यापार मंडल अध्यक्ष मूलचंद गुप्ता, अनूप केसरवानी, सचिन वैश्य, फंटू महाराज, गुलाब मिश्र, संतोष त्रिपाठी, सुमित त्रिपाठी, उमा वर्मा, शालिनी श्रीवास्तव, राकेश गुप्ता, विक्की, मनोज, विनोद, अनिरुद्ध मौजूद रहे।

हनुमानगंज : फतुहा में शब्बेदारी में रात भर अन्जुमनो ने पढ़े नौहे

प्रयागराज। फतूहा में अन्जुमन इमामिया फतूहा की ओर से शोहदाए करबला व असीराने करबला की याद में शब्बेदारी आयोजित कर करबला के बहत्तर शहीदों की याद में मजलिस जुलूस में अकीदतमंदों ने नोहा पेश किया।अनीस जायसी के संचालन में अबु सिब्तैन आब्दी ने मर्सिया पढ़ा तो मौलाना सैय्यद इंतेजार आब्दी जौनपुरी ने मजलिस को खिताब किया। उन्होंने कर्बला में हुए दर्दनाक मंजर को बयान किया जिसको सुनकर लोगो के आंखो में आंसू आ गए। शब्बेदारी में अन्जुमन जुलफेकारिया जौनपुर, अन्जुमन अब्बासिया दांदूपुर, अन्जुमन लश्करे हुसैनी,औरैनी, कौशाम्बी, अंजुमन हुसैनी, जसरा, प्रयागराज ने , खुसूसी अंदाज में महफूज, सुलतानपुरी आदि के नौहाख्वानों ने पुरदर्द नौहा पढ़ा। इस मौके पर शबीह ए अलम हजरत अब्बासशबीह ए ताबूत हजरत इमाम जैनुलआबेदीन और शबीहे जुलजनाह को अकीदत के फूल और चादरों से सजाकर कर अकीदतमंदों की जियारत के लिए बरामद किया गया। सभी जायरीनों ने अपने अकीदत के मुताबिक फूलों के सेहरे, चादर डालकर दुआएं व मन्नत मांगीं। इस शब्बेदारी का एहतेमाम अंजुमन इमामिया फतूहा के अराकीन ने किया।

खबर संक्षेप

समाजवादी जनपंचायत करमा में आज

करछना। समाजवादी पार्टी विधानसभा करछना के जोन संख्या 3 की सेक्टर, बूथ तथा पार्टी कार्यकताओं की जनपंचायत (चौपाल) रविवार को दिन में 11 बजे श्री अमृत लाल यादव इण्टर कॉलेज करमा (पुलिस चौकी के पास) आयोजित की गई है।

विधानसभा अध्यक्ष करछना ननकेश बाबू ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिलाध्यक्ष पप्पू लाल निषाद, जिला महासाचिव इंजी. जगदीश यादव, जिला उपाध्यक्ष मो. इसराइल, प्रभारी महेंद्र सरोज सहित वरिष्ठ पदाधिकारी मौजूद रहेंगे। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. विजय यादव एवं सह संयोजक अमित राही ने सभी कार्यकताओं, सेक्टर तथा बूथ पदाधिकारियों से नियत समय से नियत स्थान पर उपस्थित रहने की अपील की है। चौपाल में पूर्ववर्ती अखिलेश सरकार के कार्यों एवं वर्तमान भाजपा सरकार द्वारा जनविरोधी नीतियों पर चर्चा होगी।

मुस्लिम हॉस्टल में पुलिस की छापेमारी, 20 बम और दो तमंचे बरामद, मचा रहा हड़कंप

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मुस्लिम बोर्डिंग हॉस्टल से दो तमंचा और 20 बम बरामद किया गया है। शुक्रवार को देर रात पुलिस ने छापेमारी की। इस दौरान हॉस्टल से भारी मात्रा में बम बरामद होने पर पुलिस के होश उड़ गए। पुलिस ने बरामद बम और कारतूस को कब्जे में ले लिया है।इलाहाबाद मुस्लिम बोर्डिंग हॉस्टल के आसिफ इकबाल को कुछ लोगों ने मारपीट कर घायल कर दिया था। आसिफ की तहरीर पर 12 आरोपियों के खिलाफ मुकदमा लिखा गया था। इन आरोपियों की तलाश में पुलिस ने देर रात हॉस्टल में छापा मारा तो वहां का नजारा देख सन्न रह गई। कमरा नंबर 57 से पुलिस ने 20 बम, दो तमंचा बरामत गिया। यह कमरा मुदस्सिर नाम के अंत:वासी के नाम से एलाट है। पुलिस ने कई और कमरों की तलाशी ली। इससे हॉस्टल में हड़कंप मचा रहा।

सिविल लाइंस में रेस्टोरेंट की आड़ में चलता मिला हुक्काबार, चार गिरफ्तार, संचालक हुआ फरार

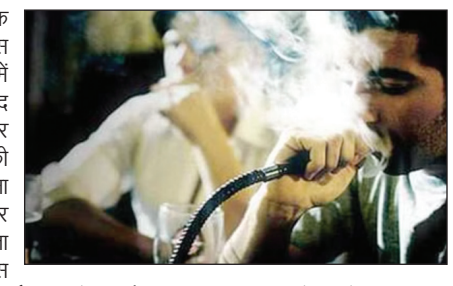

प्रयागराज। रेस्टोरेंट की आड़ में हुक्काबार संचालन के एक और खेल का भंडाफोड़ शुक्रवार को हुआ। सिविल लाइंस पुलिस ने बिग बाजार के पीछे स्थित टेरेस विला रेस्टोरेंट में छापा मारकर हुक्का, फ्लेवर, तंबाकू समेत अन्य सामान बरामद किया। साथ ही हुक्का पी रहे चार युवकों को गिरफ्तार कर लिया। हालांकि इस दौरान संचालक फरार हो गया। उसकी तलाश की जा रही है।पुलिस ने बताया कि कुछ दिनों से सूचना मिल रही थी कि बिग बाजार के बगल से जाने वाली सड़क पर स्थित टेरेस विला रेस्टोरेंट में चोरी छिपे हुक्काबार चलाया जा रहा है। बृहस्पतिवार रात 11.30 बजे के करीब सिविल लाइंस चौकी प्रभारी अभयचंद ने मयफोर्स रेस्टोरेंट में छापा मारा। इस दौरान पीछे की ओर चार युवक हुक्का पीते पकड़े गए। जबकि मौके से भारी मात्रा में हुक्का सेट, चिलम, चारकोल, तंबाकू, एक पैकेट फिल्टर व अन्य सामान बरामद किया गया।इस दौरान मौका पाकर संचालक उज्जवल कुमार निवासी शाहगंज फरार हो गया। मौके से पकड़े गए चारों युवकों को थाने लाया गया जहां पूछताछ में उन्होंने अपना नाम अर्सलान हुसैन निवासी सिविल लाइंस, कनिष्क मिश्रा निवासी प्रीतम नगर, अभय वर्मा निवासी महाजनी टोला कोतवाली और सुजल बनौथा निवासी प्रीतम नगर बताया। इंस्पेक्टर सिविल लाइंस भानुप्रताप सिंह ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ कोटपा अधिनियम के तहत केस दर्ज किया गया है। संचालक की तलाश की जा रही है।

पुलिस ने डूबने से बताई थी मौत, कोर्ट के आदेश पर दर्ज हुआ हत्या का केस

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कैंट में 13 माह पहले 20 साल के सिद्धार्थ कुमार की संदिग्ध हालात में मौत के मामले में नया मोड़ आ गया है। पुलिस ने इसे पानी में डूबने से मौत का मामला बताया था। हालांकि, कोर्ट के आदेश पर अब हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है। मृतक के पिता ने साक्ष्य छिपाने का भी आरोप लगाया है। पुलिस विवेचना में जुट गई है।कैंट के नेवादा हेरिटेंग्स रोड निवासी सिद्धार्थ का शव पिछले साल 24 जुलाई को गंगा नदी में मिला था। पिता अशोक कुमार कोरी ने तहरीर देकर बताया था कि 23 जुलाई 2022 को बेटा जानवर लेकर गंगा नदी के पास गया था, लेकिन इसके बाद वापस नहीं लौटा। उसके मोबाइल पर कॉल किया तो कभी घंटी जाती और कभी बंद हो जाती।उन्होंने बताया कि रात 11 से एक बजे के बीच किसी अज्ञात महिला ने तीन बार फोन उठाया और हैलो बोलकर काट दिया। 24 जुलाई की दोपहर 12 से एक बजे के बीच भी ऐसा ही हुआ। उसी दिन दोपहर बाद मऊ कछार गंगा नदी के किनारे से लौटते वक्त गांव के ही मोहिल व जीवा को बेटे की साइकिल मिली।उधर, खोजबीन के दौरान उसके बड़े बेटे सुधांशु व मोहल्ले के ही नन्हा को गंगा नदी के पूर्वी किनारे पर बेटे सिद्धार्थ का शव मिला। उसके शरीर पर चोट के निशान के साथ नाक व कान के पास खून भी लगा था। गर्दन की हड्डी टूटी थी। इससे आशंका थी कि उसकी हत्या की गई है। आरोप है कि उसी दिन तहरीर देने के बावजूद कैंट पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज नहीं की। इसके बाद उन्होंने कोर्ट में गुहार लगाई। अब कोर्ट के आदेश पर हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है।

अफसरों के आदेश पर भी नहीं की कार्रवाई

पिता का आरोप है कि कार्रवाई न होने पर उन्होंने उच्चाधिकारियों से कई बार मिलकर गुहार लगाई। इस पर तत्कालीन एडीजी जोन ने राजपत्रित अधिकारी की कमेटी गठित कर जांच व एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए। इसके बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई। उल्टा थाना पुलिस ने डूबने से मौत की रिपोर्ट देकर लीपापोती कर दी। पिता ने यह भी बताया कि नाली के गंदे पानी को लेकर मोहल्ले के कुछ लोगों से मारपीट हुई थी। इसमें बड़े बेटे की नाक कटने के साथ ही छोटे बेटे को काफी चोटें आई थीं। लेकिन कैंट पुलिस ने इसमें भी एनसीआर ही लिखी थी।

घर के सामने मिली लॉज मालिक की लाश

सिर पर चोट, मां ने जताई हत्या की आशंका, नशे के आदी था राम सिंह

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कर्नलगंज न्यू कटरा मोहल्ल में लॉज मालिक की लाश उसके घर के सामने मिली। उसके शरीर पर चोट के निशान मिले है। मां का कहना है कि वह दारू पीकर घर के सामने गाली-गलौज कर रहा था। इसलिए घर का दरवाजा नहीं खोला था। सूचना पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। कर्नलगंज कोतवाली अन्तर्गत न्यू कटरा निवासी राम सिंह (48) पुत्र स्वगीय हरिपाल सिंह का घर के पास ही चंद्रा लॉज है। उनकी शादी नीतू सिंह के साथ हुई थी। राम सिंह नशे के लती थे। इसी वजह से उनकी पत्नी उन्हें छोड़कर अपने मायके चली गई थी। वह अपनी मां लीला सिंह के साथ रहते थे। 2 दिन पहले राम सिंह ने अपनी मां लीला सिंह के साथ मारपीट की थी। लीला सिंह ने संबंध में पुलिस से शिकायत की थी। पुलिस ने राम सिंह का शांति भंग में चालान भी किया था। मां लीला सिंह ने बताया कि शुक्रवार को रात में करीब 11:00 से 11:30 बजे राम सिंह दारू पीकर आया दरवाजा पीट रहा था। उन्होंने दरवाजा नहीं खोला, तो वह गाली-गलौज करने लगा। फिर भी उन्होंने दरवाजा नहीं रखोला। सुबह जब उन्होंने दरवाजा खोला तो वह घर के बाहर मृत पड़ा था। उसके सिर पर चोट के निशान थे। सूचना पर पहुंची कर्नलगंज पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। लीला सिंह के मुताबिक पड़ोस में रहने वाले एक व्यक्ति से किराएदारी को लेकर राम सिंह का विवाद भी चल रहा था। मां ने हत्या की आशंका जताई है। पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम को भेज दिया है। इंस्पेक्टर कर्नलगंज बृजेश सिंह का कहना है कि पोस्टमॉर्टम कराया जा रहा है।बाकी जांच के बाद तय होगा, कि मौत की वजह क्या है।

तीर्थ पुरोहित फंदे पर झूला मौत,

अपने पिता के साथ करता था पुरोहित का कार्य

झूंसी। थाना क्षेत्र में एक तीर्थ पुरोहित ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। फंदे पर लटके हुए तीर्थ पुरोहित पर उसके पिता की नजर पड़ी तो आनन-फानन में उसे फंदे से उतार पास के एक हॉस्पिटल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया सूचना पर पहुंची पुलिस ने शनिवार को शव का पोस्टमार्टम कराया।कोहना निवासी अनमोल पांडे 26 अपने पिता के साथ पंडिताई का काम करता है। वह दो भाइयों में सबसे बड़ा था शुक्रवार की रात अनमोल ने कमरे में रस्सी के सहारे फांसी लगा ली रात में अनमोल के पिता ने देखा तो उसे फंदे से उतारा गया लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी अनमोल को 6 महीने का एक बच्चा भी है। उसकी मौत से परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

वाहन की टक्कर से दो कांवड़िये घायल, आक्रोशित कांवड़ियों ने किया जमकर बवाल, चक्काजाम

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। सोरांव थाना क्षेत्र के ददौली नहर पुल के पास अज्ञात वाहन की टक्कर से दो कांवड़िये घायल हो गए। घटना से आक्रोशित सैकड़ों कांवड़ियों ने हंगामा करते हुए सड़क जाम कर दिया। इससे हाईवे पर आवागमन बाधित हो गया। घटना सुबह करीब आठ बजे हुई। सड़क जाम पूर्वाह्न 11.30 बजे तक चलता रहा। डीसीपी अभिषेक भारती ने मौके पर पहुंचकर शिवभक्तों को समझाने बुझाने और जाम खत्म करने का प्रयास किया, लेकिन कांवड़ियों का गुस्सा शांत नहीं हुआ। बवाल को देखते हुए कई थानों की पुलिस और फोर्स मौके पर बुला ली गई है।प्रयागराज के दशाश्वमेध गंगा घाट से जल लेकर प्रतापगढ़ के बेलखरनाथ धाम जलाभिषेक करने जा रहे कांवड़ियों को शनिवार को सुबह अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। इससे दो कांवड़िये गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को तत्काल उपचार के लिए भर्ती कराया गया। घटना के बाद साथ में चल रहे कांवड़ियों का गुस्सा फूट पड़ा। देखते ही देखते हजारों कांवड़िये जुट गए और सड़क पर बैठ गए। घायल एक कांवड़िया नाम शिवम सिंह (12) वर्ष निवासी नौहरपुर दिलीपपुर प्रतापगढ़ का रहने वाला है । कांवड़ियों के आक्रोश को देखते हुए आसपास की दुकानें बंद हो गईं। पुलिस ने पहुंचकर जाम खत्म कराने का प्रयास किया, लेकिन कांवड़िये नहीं माने। डीसीपी अभिषेक भारती ने भी पहुंचकर समझाने का प्रयास किया लेकिन शिवभक्तों का गुस्सा ठंडा नहीं हुआ। मौके पर कई थानों की फोर्स बुला ली गई है। सड़क पर आवागमन बाधित हो गया है। वाहनों की लंबी कतार लग गई है।

डीएम ने किया स्वास्थ्य विभाग के सहयोगी संस्थाओं यूनीसेफ डब्लूएचओ की मानीटरिंग फीडबैक के सम्बंध में समीक्षा बैठक

लापरवाही पर डीसीपीएम अशफाक अहमद सहित कई एमओआईसी का वेतन रोकने के दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में शनिवार को संगम सभागार में स्वास्थ्य विभाग के सहयोगी संस्थाओं यूनीसेफ, डब्लूएचओ की मानीटरिंग फीडबैक के सम्बंध में समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने आशाओं के एचबीएनसी से सम्बंधित प्रशिक्षण दिए जाने के बारे में जानकारी ली। उन्होंने एचबीएनसी कार्यक्रम में आशाओं का प्रशिक्षण लक्ष्य के सापेक्ष कम पाये जाने पर डीसीपीएम अशफाक अहमद का वेतन रोके जाने का निर्देश दिया है साथ ही साथ उन्होंने 15 दिनों के अंदर उक्त प्रशिक्षण में प्रगति लाये जाने हेतु निर्देशित किया है। जिलाधिकारी ने एचबीएनसी किट शत-प्रतिशत आशाओं के पास उपलब्ध कराये जाने का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने एचबीएनसी में प्रशिक्षित आशाओं के द्वारा रिपोर्ट न प्रस्तुत करने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए करछना, रामनगर, माण्डा, मेजा तथा शंकरगढ़ के प्रभारी चिकित्सा अधीक्षकों का वेतन रोके जाने का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी को कॉल सेंटर की स्थापना कराते हुए बुधवार एवं शनिवार को वीएचएनडी दिवस पर एएनएम की मानीटरिंग कराये जाने का निर्देश दिया है कि इनके पास सभी उपकरण एवं दवाएं उपलब्ध रहे। जिलाधिकारी ने कार्यों में लापरवाही बरतने पर रामनगर, मऊआइमा एवं हण्डिया के चिकित्सा अधीक्षक का वेतन रोके जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने मंत्रा पोर्टल पर अच्छा कार्य करने वालो को सम्मानित किए जाने के लिए भी कहा है। बैठक में जिलाधिकारी ने हिदायत देते हुए कहा है कि स्वास्थ्य कार्यक्रमों में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता स्वीकार्य नहीं है। कार्यों में लापरवाही और उदासीनता पाये जाने पर सम्बंधित के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की जायेगी। उन्होंने कार्यक्रमों का निरंतर अनुश्रवण करते रहने का भी निर्देश दिया है। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी आशु पाण्डेय, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारीगणों के अलावा चिकित्सा अधीक्षकों सहित स्वास्थ्य विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

कार सवारों ने स्कूल से लौट रही छात्राओं से की छेड़खानी

झूंसी। थाना क्षेत्र अंदावा सहसो मार्ग पर पटेल नगर में स्कूल से लौट रही छात्राओं से छेड़खानी का मामला प्रकाश में आया है। स्कूल के प्रधानाचार्य ने मामले की लिखित शिकायत झूंसी पुलिस से की है। पुलिस सीसी टीवी के मदद से कार सवार युवकों की तलाश में लगी है। बताया जाता है कि शनिवार की दोपहर स्कूल की छुट्टी के के बाद कुछ छात्राएं घर जा रही थी। वह पटेल नगर चौराहे पर पहुची थी। तभी सहसो की ओर से आई एक कार में सवार कुछ युवक छात्राओं पर फब्तियां कसने लगे। छात्राओं ने विरोध किया तो मनबढ़ युवक अश्लील हरकत करने हुए पीछा करने लगे। छात्राएं डर कर वापस स्कूल भाग कर पहुची और आपबीती प्रधानाचार्य को सुनाई तो प्रधानाचार्य छात्राओं को लेकर झूंसी थाने पहुच मामले की लिखित शिकायत पुलिस से की।

परिवार के साथ तिरुपति बालाजी के दरबार में नंदी ने किया दर्शन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। परिवार के साथ नंदी ने साझा की अपनी तस्वीर। उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी शनिवार को आंध्र प्रदेश के तिरुमला पर्वत पर विराजमान भगवान श्री हरि विष्णु जी के दिव्य स्वरूप एवं जन-जन की आस्था के केंद्र वेंकटेश्वर स्वामी तिरुपति बालाजी भगवान दर्शन करने पहुंचे। नंदी ने प्रयागराज की पूर्व महापौर पत्नी अभिलाषा गुप्ता व बच्चों के साथ दर्शन किया। वहां पर नंदी ने केशदान कर समस्त प्रदेशवासियों के प्रेम, शांति, सद्भावना और खुशहाली की कामना की। मंत्री नंदी ने कहा कि तिरुपति भगवान बालाजी के दरबार में केश दान मानवता के कल्याण के लिए समग्र समर्पण का प्रतीक है। मंत्री नंदी ने केस दान के बाद परिवार के साथ फोटो भी साझझा किया। मंत्री के मीडिया प्रभारी बालाजी केसरवानी ने इसकी पुष्टि की है। रिमोट बम हमले के बाद नया जीवन पाने वाले मंत्री नंदी प्रत्येक वर्ष अपना पुनर्जन्मोत्सव मनाते हैं। इस बार भी नंदी ने अपने बहादुरगंज स्थित आवास पर भव्य आयोजन किया था। यहां मंदिर पर उन्होंने घंटों तक आराधना भी की थी। दरअसल, 12 जुलाई 2010 को नंद गोपाल गुप्ता नंदी के ऊपर रिमोट बम से हमला किया गया था। उस समय नंदगोपाल गुप्ता नंदी मायावती सरकार में कैबिनेट मंत्री थे। इस घटना की आवाज पूरे प्रदेश में गूंजी थी।

शिवपुराण कथा में पहुंचे महापौर लिया आशीर्वाद

अखंड भारत संदेश

झूंसी। मुट्ठीगंज में मुंशीराम की बगिया में नर सेवा नारायण सेवा संस्थान के तत्वाधान में चल रही साप्ताहिक शिवपुराण कथा का शनिवार शाम आरती के बाद समापन हुआ। इस अवसर पर महापौर गणेश केशरवानी ने आरती कर महाराज जी का आशीष प्राप्त किया। आचार्य सतानन्द महाराज ने आठ दिनों तक लोगो को कथा का सर पान कराया। जिसके बाद उपस्थित श्रोताओ के सवालों का जवाब देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया। जानकारी देते हुए श्री राम केशरवानी ने बताया कि कथा के दौरान प्रति दिन रुद्राभिषेक व रविवार को महाप्रसाद का आयोजन किया गया है। इस दौरान महानगर उपाध्यक्ष राजू पाठक, गिरिजेश मिश्रा, मोहित केशरवानी, अमर सिंह, मनोज जिगिना, रवि केशरवानी, आयुष अग्रहरि, निदेशक सेंट्रल एकेडमी एसके तिवारी, कुमार नारायण, सुधीर केशरवानी सहित भारी संख्या में श्रोतागण उपस्थित रहे।

बाइक सवार छात्र पर जानलेवा हमला

नैनी। नैनी कोतवाली क्षेत्र में शनि मंदिर के पास शुक्रवार की रात बाइक सवार छात्र पर जानलेवा हमला किया गया। उसकी पहले जमकर पिटाई की गई। फिर उस पर बम फेंक दिया गया। लबे चौराहे पर बमबाजी से दहशत फैल गई। आसपास के लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर घायल छात्र को अस्पताल पहुंचाया। इस मामले में दो नामजद और दो अज्ञात के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। पुलिस का कहना है कि बाइक ओवरटेक करने को लेकर झगड़ा हुआ था। हमलावर मौके से भाग चुके थे, उनकी तलाश की जा रही है। यमुनानगर के नैनी कोतवाली अंतर्गत चक्र रघुनाथ कॉटन मिल मोहल्ले का रहने वाला प्रांजल पांडेय (17) पुत्र मनोज पांडेय 11वीं कक्षा का छात्र है। गुरु नानक नगर स्थित स्कूल में पढ़ता है। शुक्रवार रात में वह रामनगर चौराहे पर बाइक में पेट्रोल डलवाने के लिए गया था। पेट्रोल डालकर वह वापस घर लौट रहा था। शनि मंदिर के पास दो बाइक सवार चार लड़कों ने उसे रोक लिया। बिना कुछ बोल ही उन लड़कों ने उसे बेल्ट से पीटना शुरू कर दिया। जब प्रांजल वहां से भागने लगा तो उन लोगों ने उस पर बम फेंक दिया। बमबाजी से चौराहे पर हड़कंप मच गया। उसकी तहरीर पर दो नामजद और दो अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस मामले की जांच कर रही है। इंस्पेक्टर नैनी वीरेंद्र सिंह का कहना है कि मारपीट करने वाले दोनों आपस में रिश्तेदार हैं।

अजय राय को प्रदेश अध्यक्ष बनाये जाने पर कांग्रेसियों में खुशी

संघर्षशील व कर्मठी नेता को दायित्व मिलने पर पार्टी को मिलेंगी मजबूती : अशफाक

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पूर्व मंत्री अजय राय को उत्तर प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बनाए जाने पर कांग्रेस के एआईसीसी सदस्य अशफाक अहमद के आवास पर एक दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया। इस दौरान एआईसीसी सदस्य अशफाक अहमद ने कहा कि शीर्ष नेतृत्व ने एक संघर्षशील, कर्मठ, ईमानदार नेता को यह दायित्व सौंपकर नई ऊर्जा का संचार किया है उन्होंने कहा कि राय किसान, मजदूर, बुनकर, बेरोजगार और महिलाओं के सम्मान के लिए सदैव सड़कों पर संघर्ष करते रहे हैं जिनके नेतृत्व में कांग्रेस के संगठन को बहुत मजबूती मिलेगी तथा प्रदेश की समस्याओं को लेकर संघर्ष होगा। और 2024 लोकसभा के चुनाव में पार्टी को उत्तर प्रदेश से अच्छा परिणाम मिलेगा। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डा. जगत नारायण सिंह ने कहा कि पार्टी का यह निर्णय बहुत ही सराहनीय है निश्चित ही पार्टी को मजबूती मिलेगी और राय जनता व कार्यकताओं की लड़ाई हमेशा लड़ते रहे हैं जिनके नेतृत्व में कार्यकताओं में एक नया जोश उत्पन्न होगा। रश्मिता दुबे ने अजय राय को उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष बनाए जाने पर शीर्ष नेतृत्व का आभार प्रकट करते हुए कहा कि राय एक मिलनसार व संघर्षशील नेता हैं। जिनके नेतृत्व में कार्यकताओं का मनोबल मजबूत होगा। इस अवसर पर एडवोकेट अरविंद पाण्डेय, एडवोकेट अरशद सिद्दीकी, एडवोकेट सुमित कुमार विश्वकर्मा, चन्द्र भान,डा.कृष्ण कुमार द्विवेदी, शेषमणि पटेल, मोहम्मद सददाम, मोहम्मद शमीम प्रधान, रश्मिता दुबे,मोहम्मद वसीम,अमानेश दुबे नवीन विश्वकर्मा शिव प्रसाद, अर्जुन प्रधान, राजनाथ यादव आदि लोग उपस्थित रहे।

शासन की नीतियों तथा विकास कार्यक्रमों को अधिकारी जन-जन तक पहुँचाएंः राज्यमंत्री

राज्यमंत्री ने विकास कार्यो व कानून व्यवस्था की अधिकारियों के साथ की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। राज्यमंत्री ग्राम्य विकास एवं समग्र ग्राम विभाग, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग विजय लक्ष्मी गौतम ने विकास भवन सभागार में विकास कार्यो व कानून व्यवस्था की समीक्षा की। राज्यमंत्री ने मुख्यमंत्री की घोषणा के अन्तर्गत निर्मित परियोजना 132 केवी उपकेन्द्र माधाता व सम्बन्धित लाइन तथा ग्राम पंचायत नजियापुर विधानसभा क्षेत्र रानीगंज में निर्मित मिनी स्टेडियम के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की।

आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री/मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना (गोल्डेन) की समीक्षा में राज्यमंत्री ने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप कोई भी पात्र व्यक्ति गोल्डेन कार्ड से वंचित न रहे, सभी पात्र व्यक्तियों का गोल्डेन कार्ड बनाया जाये क्योंकि इस योजना के तहत 5 लाख तक की निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। जल जीवन मिशन की समीक्षा के दौरान राज्यमंत्री ने निर्देशित किया कि जिन परियोजनाओं का कार्य कराया जा रहा है वह गुणवत्तायुक्त हो और सड़कों पर जो भी गड्ढे खोदे जा रहे है उन्हें जल्द से जल्द दुरूस्त करायें क्योंकि गड्ढे के खुले होने से दुर्घटनायें होने की सम्भावनायें रहती है। राज्यमंत्री ने जिले की कानून व्यवस्था की समीक्षा तथा सीओ सिटी से अपराध नियंत्रण पर की जा रही कार्यवाही की जानकारी प्राप्त की। राज्यमंत्री ने कानून व्यवस्था को और चुस्त-दुरूस्त बनाये रखने तथा अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण की कार्यवाही सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। बैठक में भाजपा जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र, मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, पीडी डीआरडीए आर0सी0 शर्मा, जिला विकास अधिकारी राकेश प्रसाद, सांसद प्रतिनिधि विवेक उपाध्याय, सीओ सिटी करिश्मा गुप्ता, समस्त खण्ड विकास अधिकारी, पार्टी के पदाधिकारीगण व अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

विकास कार्यों की समीक्षा करतीं विजय लक्ष्मी गौतम।

सोशल मीडिया पर वायरल असलहा का पुलिस ने किया खुलासा

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। इन दिनों नवाबगंज थाना क्षेत्र का अस्थान गांव निवासी एक युवक फेसबुक पर अवैध असलहा का प्रदर्शन कर फेसबुक पर अपनी पहचान बना रहा है फेसबुक पर खुलेआम असलहा का प्रदर्शन नवाबगंज पुलिस के किसी चुनौती से कम नही है इसी तरह अस्थान का एक युवक कुछ दिन पूर्व फेसबुक पर पिस्टल लेकर उसको वायरल किया जिसमे पुलिस ने जाँच पड़ताल मे नकली पिस्टल पाया लेकिन युवक के खिलाफ कोई भी कारवाई नही की गयी जिससे थाना क्षेत्र के अस्थान के संधई का पुरवा निवासी गुलशन सिंह पटेल ने फेसबुक पर असलहा लिए सोशल मीडिया पर वायरल किया है जिससे गांव के लोगो मे तरह तरह की चर्चा चल रही है। इस बाबत जानकारी करने पर अस्थान चैकी प्रभारी दीपक कुमार मौर्य ने बताया कि सोशल मीडिया पर वायरल हुई डबल बैरल 12 बोर का असलहा लिए युवक गुलशन पटेल पुत्र दूधनाथ पटेल संधई का पुरवा अस्थान गांव का निवासी है जो अपने मौसी के लडके धीरेन्द्र पटेल स्व0 हरिश्चंद्र पटेल रानीगंज कैंथवला शराब की दुकान पर वर्ष 2018-19 से सेल्स मैन है। गुलशन कुमार पटेल के हाथ मे जो डीबीबीएल 12 बोर का असलहा है वह असलहा मानिकपुर निवासी सुरेश मिश्रा पुत्र स्व0 शास्त्री प्रसाद मिश्रा बाबा का पुरवा मानिकपुर निवासी की लाइसेंसी बंदूक है जिसका कागजात चेक किया गया गुलशन पटेल सुरेश मिश्रा व गुलशन पटेल दोनो धीरेन्द्र पटेल के शराब ठेका के सेल्स मैन है। गुलशन कुमार पटेल ने मौका पाकर अपनी फोटो असलहा के साथ खींच लिया और उसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया जिसको कड़ी चेतावनी देकर सोशल मीडिया पर वायरल न करने की सख्त हिदायत पुलिस ने दिया।

नगर पंचायत कार्यालय पर किया गया शोक सभा का आयोजन

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। प्रदेश सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह (मोती सिंह) के भतीजे ब्लाक प्रमुख राकेश कुमार सिंह पप्पू सिंह के पुत्र यश प्रताप सिंह (बिट्टू) के आकस्मिक निधन पर पट्टी नगर कार्यालय पर एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें पट्टी एसडीओ नगर पंचायत के कर्मचारी, सभासद व पट्टी के व्यवसायी की मौजूदगी में दो मिनट का मौन धारण करके दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया गया।

हनुमान मंदिर चिलबिला तालाब पर लगने वाले मेले की हुई समीक्षा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। चिलबिला हनुमान मंदिर तालाब पर नाग पंचमी को गुड़िया का मेला गतवर्ष की भांति लगेगा। इसको लेकर मंदिर समिति की एक बैठक हनुमान जी महाराज की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में एक समिति का भी गठन किया गया जो खेल प्रतियोगिता आदि को संपन्न करायेगी। मंदिर समिति के महासचिव रोशनलाल उमरवैश्य ने बताया कि गतवर्ष की भांति हनुमान जी महाराज की कृपा से सैकड़ो वर्षों से लग रहे गुड़िया का मेला इस वर्ष भी लगेगा एवं कबड्डी, लंबी कूद खेल प्रतियोगिता भी आयोजित की जाएगी। जिसे संपन्न कराने के लिए मेला प्रभारी संतोष कुमार (बबलू), छेदीलाल, देवानंद, ऋषभ उमरवैश्य, सूरज उमरवैश्य को बनाया गया है। यह आयोजन समस्त चिलबिला नगरवासी हनुमान भक्तों द्वारा हर वर्ष आयोजित किया जाता है। बैठक में कपिल देव, सुरेश अग्रवाल, आशीष उमरवैश्य, रामगोपाल, बजरंग लाल, त्रिभुवन लाल, आदर्श कुमार, संतोष कुमार, देवानंद, छेदीलाल, सूरज कुमार, ऋषभ, प्रमोद कुमार, सूरज उमरवैश्य, विवेक कुमार, आशीष लाइट, सनी तिवारी, सोनू तिवारी आदि उपस्थित रहे।

कार में लगी आग, मची अफरा-तफरी

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली क्षेत्र के बाबागंज मोहल्ले में एक पेट्रोल टंकी पर पेट्रोल भरा कर गाड़ी को स्टार्ट करते हुए फोर व्हीलर कार में आग लग गई। ड्राइवर मौके पर गाड़ी पेट्रोल टंकी के सामने खड़ी कर भाग निकला। वहीं राहगीरों ने गाड़ी पर पानी डालकर उसको धक्का देकर बीच रोड पर उसे किनारे किया। इस दौरान पेट्रोल टंकी पर बड़ा हादसा होने से बच गया। कुछ देर बाद पहुंची फायर सर्विस ने पूरी तरह से गाड़ी में लगी आग पर काबू पाया। इसे लेकर बाबागंज मोहल्ले में अफरा-तफरी का माहौल रहा और जाम की स्थिति बनी रही।

भागवत कथा श्रवण से कृष्ण भगवान में बढ़ती है प्रीति

भागवत कथा के अंतिम दिन बोले आचार्य कृष्ण कुमार व्यासजी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शहर के रेलवे स्टेशन रोड पर शिवम लाज में चल रही श्रीमद् भागवत कथा के अंतिम दिन कथावाचक आचार्य कृष्ण कुमार व्यास जी ने कहा कि भागवत कथा सुनने से अर्थ, धर्म व मोक्ष का लाभ मिलता है। भगवान कृष्ण की कृपा से सभी पितरों का उद्धार एवं सद्गति प्रथा कृष्ण के चरणों में प्रीति बढ़ती है।

उन्होंने कहा कि भक्त मोक्ष नहीं चाहता, वह तो केवल भक्तित्व प्राप्त करना चाहता है।

कथा कहते आचार्य कृष्ण कुमार व्यास जी।

इसका उदाहरण उन्होंने हनुमान जी के जीवन से लिया जिन्होंने जीवन पर्यन्त भगवान श्रीराम के चरणों के भक्ति में विलीन रहे। व्यास जी ने इसे चैपाई में कहा कि ह्नअस अभिमान जाई जन मोरे, मैं सेवक रघुपति पति मोरे। व्यास जी ने आगे बताया कि कृष्ण भगवान की आठ पटरानिया अष्टधा की प्रतीक हैं। उन्होंने बताया कि नारायण बलि सत्येश कृष्ण के परितः इन्हीं अष्ट शक्तियों का आवाहन और कृष्ण के साथ पूजन से मृतक जीव जो प्रेत बन जाता है, वह मोक्ष को प्राप्त कर जाता है। कृष्ण की पटरानियों में रुकमणि, काम, विजय की प्रतीक, जामवती क्रोध विजय की प्रतीक तथा सत्यधाम लोभ विजय की प्रतीक है। इसके अलावा कालिन्दी, मित्रबिन्दा, सत्य लग्नजीति, श्रुतिकीर्ति लक्ष्मणा हैं। कथा व्यास ने इसके अलावा भौमासुर उद्धार, उषा अनुरुद्ध मिलन, मृग की कथा, सुदामा कथा तथा राजा नृग की कथा भी सुनाया। कथा के पूजन में पं0 विनोद पाण्डेय शास्त्री व राम प्रसाद शास्त्री सहयोगी के रुप में शामिल हैं। सात दिनों तक चली इस संगीतमयी कथा में ग्रामीण इंटर कालेज के अध्यक्ष श्याम किशोर शुक्ल, तिलक कालेज के अध्यक्ष डा0 प्रशांत देव शुक्ल, प्रधानाचार्य प्रमोद कुमार तिवारी, अवकाश प्राप्त बैंक कर्मी एनपी मिश्रा, भाजपा महिला मोर्चा की सक्रिया नेता सारिका श्रीवास्तव, एमडीपीजी कालेज के जनसंपर्क अधिकारी प्रो0 सीएन पाण्डेय, प्रो0 किरन मिश्रा, ज्योतिषज्ञाता डा0 अनीता प्रकाश सहित बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल रहीं। भागवत कथा के मुख्य यजमान आशा मिश्रा एवं उनके परिजन डा0 संजय मिश्रा, श्वेता मिश्रा, अशोक कुमार मिश्रा, नीलम मिश्रा, कंचन मिश्रा, दीपिका, डा0 अनुराग मिश्रा, चंदन मिश्रा, शालिनी आदि मौजूद रहे।

युवक का अपहरण कर ले गए आरोपी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। बहन के घर अपने पति के साथ आई युवती ने अपने पति के अपहरण का आरोप अपने ही भाई तथा एक अन्य आरोपी के ऊपर लगाया है। पुलिस शिकायत के बाद मामले की जांच में जुटी हुई है। पड़ोसी जनपद जौनपुर के सिकरारा थाना अंतर्गत हरिगांव की रहने वाली नंदनी पत्नी अमन कुमार ने बताया कि उसका पति गुजरात में कमाई करता है शुक्रवार को दोपहर अपने पति के साथ पट्टी कोतवाली क्षेत्र के होशियारपुर गांव में आई थी शाम के समय जौनपुर जनपद का रहने वाला उसका भाई तथा एक अन्य आरोपी कार से पहुंचे और उसके पति को मारते पीटते हुए उसे कार में भरकर वहां से लेकर चले गए। पीड़ित महिला ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में शिकायती पत्र देकर इंसाफ की गुहार लगाई है।

महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाना आवश्यक

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी नगर स्थित शेख पन्नालाल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में एक बैठक हुई जिसमें तरुण चेतना संस्थान तथा अस्पताल परिसर के डॉक्टरों ने महिलाओं को जागरूक करते हुए उनकी सेहत के प्रति ध्यान देने की बात कही। नसीम अंसारी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि किसी भी मरीज के साथ लिंग, जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र के आधार पर उपचार में बिना भेदभाव के पाने का अधिकार है. उन्होंने जोर देकर कहा कि मरीजों के अधिकारों चार्टर को तुरंत लागू किया जाए। कार्यक्रम का संचालन हकीम अंसारी ने किया। इस मौके वृजलाल, कलावती,रमावती, श्रीकांत, रीता देवी, विमला देवी सहित आशा संघ की अध्यक्ष आशा सिंह व अशोक लता आदि की भूमिका सराहनीय रही।

सीआरओ ने सुनीं शिकायतें, इक्यावन में से तीन का हुआ निस्तारण

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। तहसील सम्पूर्ण समाधान दिवस में इक्यावन शिकायतों मे से तीन का निस्तारण किया गया। जिले के सीआरओ राकेश कुमार ने शिकायतों की सुनवाई करते हुए अफसरों को व्यवहारिक निस्तारण कराए जाने के निर्देश दिये।

हालांकि सीआरओ समाधान दिवस में समस्या के निस्तारण न होने पर दोबारा फिर शिकायतें देख नाराज भी हुए। उन्होनें एसडीएम से कहा कि वह शिकायतों के निस्तारण की स्वयं समीक्षा करें। समाधान दिवस मे सर्वाधिक शिकायतें राजस्व की पन्द्रह, पुलिस दस, विकास विभाग पांच, समाज कल्याण तीन व अन्य अठारह रहीं। समाधान दिवस के बाद सीआरओ के निर्देश पर एसडीएम तथा सीओ स्थलीय निरीक्षण के लिए भी रवाना हुए दिखे। इस मौके पर एसडीएम लालधर सिंह यादव, सीओ रामसूरत सोनकर, तहसीलदार धीरेन्द्र प्रताप सिंह, बीईओ प्रभाकर यादव, बीडीओ लालगंज इंदु प्रकाश श्रीवास्तव, एसडीओ विद्युत आशुतोष कुमार, आदि रहे।

समाधान दिवस में समस्याएं सुनते सीआरओ।

बेल्हा की बहनों के हाथ से बनी राखियों से सजेंगी सैनिक भाइयों की कलाइयां

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एलायंस क्लब इंटरनेशनल प्रतापगढ़ द्वारा विगत 25 वर्षों की भांति इस वर्ष भी सीमा पर तैनात सैनिक भाइयों को भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदया के माध्यम से प्रतापगढ़ की बहनों द्वारा निर्मित राखियां प्रेषित की गई। इसी के साथ अक्षत, रोली चंदन आदि भी पैकेट में रखे गए। प्रधान डाकघर के प्रवर डाक अधीक्षक संजय कुमार वर्मा ने 2100 राखियो का पैकेट स्वयं ग्रहण कर टिकट इत्यादि लगवा कर भेजने का आदेश दिया।

गौरतलब है कि क्लब के अंतरराष्ट्रीय निदेशक समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य ने बेल्हा की बहनों से राखियां एकत्रित करी और 2100 राखियो का पैकेट राष्ट्रपति महोदया को डाक से भेजा। प्रधान डाकघर के प्रवर डाक अधीक्षक संजय कुमार वर्मा इस महान कार्य पर खुशी प्रकट करते हुए कहा कि राखियां पाकर परिवार से दूर रहकर सीमा पर संघर्ष कर रहे सैनिक भाइयों का मनोबल बढ़ेगा और वे अकेला नहीं अनुभव करेंगे। विगत 25 वर्षों से राखियां भेज रहे क्लब के अंतरराष्ट्रीय निदेशक समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य ने कहा कि यह राखियां बहनों के स्नेह का प्रतीक हैं। कठिन परिस्थितियों में जूझ रहे जुझारू सैनिक भाइयों का राखियां पाकर उत्साह बढ़ेगा और वे प्राणप्रण से देश की रक्षा कर सकेंगे और उनका हौसला बढ़ाना प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य है। इस अवसर पर डाकघर स्टाफ के पंकज शर्मा, पंकज मौर्य, सुरेंद्र कुमार, श्रेया सिंह, रानी कुमारी, कविता यादव, रेखा उमरवैश्य, पूनम गुप्ता, अर्चना खंडेलवाल, सुधा अग्रवाल, शिवेश शुक्ला, विवेक यादव, परमानंद मिश्रा, आदर्श कुमार, छेदीलाल, संतोष कुमार, देवानंद आदि उपस्थित रहे।

विगत 25 वर्षों से क्लब द्वारा भेजी जा रही है राखियां

डिग्री कालेज कालाकांकर में शिक्षक अभिभावक का कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

अभिभावकों से बच्चो पर सोशल मीडिया पर नजर रखने की बात कही गई

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के अंतर्गत मदन मोहन मालवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कालाकांकर में आइक्यूएसी की संयोजक प्रो0 रेखा सिंह मैम के मार्गदर्शन में शिक्षक अभिभावक सम्मेलन 2023 का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित कर बैठक का शुभारंभ मुख्य अतिथि कालाकांकर राजभवन के प्रबंधक/प्रशासकीय समिति के उप सचिव डॉ घनश्याम यादव व प्राचार्य प्रो शिवम श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर सभी विभागों के अध्यक्ष ने प्रगति आख्या अभिभावकों के सामने रखा। प्राचार्य ने बताया कि बैठक का मुख्य उद्देश्य छात्र-छात्राओं का सर्वांगीण विकास कैसे हो अवसाद, निराशा, अनुशासनहीनता जैसी प्रवृत्तियों से कैसे बचाया जाए। अभिभावकों में शंभूनाथ शुक्ला समेत आदि अभिभावकों ने भी अपने विचार रखे और कहा कि उन्हें अत्यंत गर्व होता है कि एक अनुशासित शिक्षण संस्था में उनके बच्चे अध्ययनरत हैं और भविष्य में अच्छा करे सभी बच्चो की यही कामना है। अभिभावकों ने छात्र-छात्राओं के हितों और विद्यालय के विकास के लिए किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की, जिसमें अभिभावक अध्यापक संघ व विद्यालय प्रबंधन समिति के सत्र 2023-24 के लिए कार्यकारिणी चुनी गई। अभिभावक अध्यापक संघ के अध्यक्ष पद शंभूनाथ शुक्ला, सचिव पद आशुलता गुप्ता, प्रतिनिधि महिला अभिभावक सीमा गुप्ता, प्रतिनिधि पुरुष अभिवावक श्री हरिश्चंद्र सरोज, प्रतिनिधि महिला शिक्षिका मीना, प्रतिनिधि पुरुष शिक्षक सूरज सिंह, सर्वसम्मति से चुने गए। कार्यक्रम के संयोजक एवं मंच का सफल संचालन मुख्य नियंता सर्वेश सिंह ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ घनश्याम यादव महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो शिवम श्रीवास्तव महाविद्यालय के मुख्य नियंता सर्वेश सिंह एवम महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए प्रो रामकरन ने सभी आगंतुको को धन्यवाद ज्ञापित किया।

डिग्री कालेज कालाकांकर मे शिक्षक अभिभावक कार्यक्रम मे उपस्थित अतिथिगण

गायब हुए मोबाइल फोन पाकर खिले फरियादियों के चेहरे, रंग लाया एएसपी का प्रयास

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। एसपी सतपाल अंतिल के जिले में कारगर अपराध नियंत्रण अभियान को लेकर शनिवार का दिन कोतवाली मे कई पीड़ितो के चेहरे पर मुस्कान बिखेर गया। आईएसओ कोतवाली का प्रभार संभाल रहे आईपीएस सहायक पुलिस अधीक्षक अमृत जैन की कई दिनों की कड़ी मेहनत रंग लायी। पूरे देश स्तर पर अमृत जैन के सकारात्मक प्रयास के चलते उन्तीस कोतवाली क्षेत्र से चोरी गये मोबाइल पीड़ितो के हाथ लग गये। शनिवार को कोतवाली में सहायक पुलिस अधीक्षक अमृत जैन ने पीड़ितो को उनके गायब मोबाइल फोन वापस कराए। एएसपी के इस प्रयास की पीडितो के साथ कोतवाली मे मौजूद हर कोई सराहना करता दिखा।

मांगों को लेकर एमडीपीजी कालेज के शिक्षकों ने काली पट्टी बांधकर जताया विरोध

मुख्य मुद्दा विषमता पूर्ण ढंग से बायोमीट्रिक उपस्थिति का विरोध

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एमडीपीजी कालेज के शिक्षकगण उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक महासंघ के आह्वान पर अपनी मांगों के समर्थन में काली पट्टी बांधकर विरोध जताते कार्यरत रहे। मुख्य मुद्दा विषमता पूर्ण ढंग से बायोमीट्रिक उपस्थिति का विरोध रहा।

शिक्षको का विरोध बायोमीट्रिक की अनिवार्यता को लेकर न होकर इस बात पर है कि इस व्यवस्था को विषमता पूर्ण ढंग से लागू किया जा रहा है। यदि गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय इसके दायरे मे नहीं लाए जाएंगे तो सहायता प्राप्त एवं सरकारी महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र 75 प्रतिशत की अनिवार्य उपस्थिति की शर्त के चलते परीक्षा एवं छात्रवृत्ति से वंचित हो जाएगें। इसका परिणाम यह होगा कि सहायता प्राप्त एवं सरकारी महाविद्यालयों मे अध्ययरत छात्र इसका आने वाले वर्षो में त्याग कर उन महाविद्यालयों में चले जायेगे जहाँ यह व्यवस्था नही है। इसके पीछे सरकार की मंशा सुधार की न होकर निजीकरण को बढ़ावा देने की है। अतः सहायता प्राप्त एवं सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक इसका तब तक विरोध करते रहेंगे जब तक कि इसको संविधान की भावना के अनुसार लागू नही किया जाएगा। इस अवसर पर मुख्य रूप से इकाई अध्यक्ष प्रो. किरण मिश्रा, महामंत्री डॉ.अरुण कुमार मिश्र ने सरकर की मंशा पर प्रश्न चिन्ह खड़ा किया।इस अवसर पर प्रो अरुण कुमार श्रीवास्तव, प्रो. अरविन्द मिश्र,प्रो. किरण मिश्रा, प्रो. सुधांशु त्रिपाठी, प्रो. राधा कृष्ण दूबे, प्रो अमिता मिश्रा,प्रो गीता शुक्ला, डॉ.अरविंद कुमार मौर्य,डॉ. शैलेश कुमार पांडे, डॉ. अरुण कुमार मिश्र, डॉ. संजय कुमार दुबे, डॉ. रेखा मिश्रा डॉ. अभिषेक सिंह, डॉ. मुक्ता वर्मा, डॉ. विक्रांत सिंह, डॉ.प्रीति मिश्रा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

काली पट्टी बांधकर विरोध जताते एमडीपीजी कालेज के शिक्षकगण

अधेड़ ने अपनी लाइसेंसी रिवाल्वर से खुद को गोली मारकर की आत्महत्या

अखंड भारत संदेश

घटना को लेकर परिजनो में मचा कोहराम

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के एक गांव में अधेड़ ने खुद की लाइसेंसी रिवाल्वर से अपने गोली मारकर आत्महत्या कर ली,घटना के बाद मौके पर पहुंची बेटी ने परिजनो को सूचना दी,सूचना पर परिजनो ने आनन फानन में उन्हें नजदीक के अस्पताल ले गए जहां से उन्हे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया जहां उनकी मौत हो गई, घटना की सूचना पर सीओ सिराथू कोखराज थाना पुलिस और फोरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंचे और जांच शुरू कर दी। मिली जानकारी के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के अयाजमउ निवासी बालकृष्ण पांडेय उम्र लगभग 52 वर्ष पुत्र शोभा लाल को पिछले साल लकवा मार गया था,जिसके बाद से वह तनाव में रहते थे, शनिवार की शाम उन्होंने अपनी खुद की लाइसेंसी रिवाल्वर से अपनी कनपटी पर गोली मार ली, गोली चलने की आवाज से उनकी बेटी पहुंची और शोर मचाया तो पड़ोसी परिवार के लोग भागकर पहुंचे और उन्हें नजदीक के अस्पताल ले गए जहा से उन्हे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया जहा डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया घटना की सूचना पर सीओ सिराथू अवधेश विश्वकर्मा, कोखराज थाना पुलिस मौके और फोरेंसिक टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और जांच में जुट गए,सीओ सिराथू अवधेश विश्वकर्मा ने बताया कि एक व्यक्ति ने अपनी लाइसेंसी रिवाल्वर से खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली है, शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है, जांच की जा रही है, जांच के बाद जो भी तथ्य सामने आएंगे उनके आधार पर आगे की कायार्वाई की जायेगी।

तहसील मंझनपुर में जिलाधिकारी एवं एसपी ने सुनी जनशिकायतें

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने तहसील मंझनपुर में आमजन की शिकायतों को सुना एवं सम्बन्धित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण व समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश दियें। जिलाधिकारी ने राजस्व से सम्बन्धित शिकायतों पर राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर शिकायत को निस्तारित करने के निर्देश दियें। सम्पूर्ण समाधान दिवस में तहसील मंझनपुर में कुल 23 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 03 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। समाधान दिवस में शिकायतकर्ता गिरेन्द्र, निवासी ग्राम-पुनवार ने प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया कि गांव के व्यक्ति द्वारा तालाबी भूमि पर कब्जा कर निर्माण कार्य कराया जा रहा है, जिस पर जिलाधिकारी ने तहसीलदार को जॉच कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दियें। शिकायतकर्ता मानसिंह निवासी ग्राम-कोतारी पूरब ने प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया कि आराजी संख्या-217, रक्बा-0.023 हे0 भूमि होलिका दहन के नाम से दर्ज, इस भूमि पर कुछ व्यक्तियों द्वारा अवैध कब्जा कर लिया है, जिस पर जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी मंझनपुर को जॉच कराकर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दियें है तहसील सिराथू में कुल 47 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 04 शिकायत का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया तथा तहसील चायल में कुल 42 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 03 शिकायत का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया।

न्यूज झरोखा

284 बंदियों तथा जेल कर्मचारियों का नेत्र परीक्षण कर चश्मा व दवाओं का किया वितरण

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में जिला कारागार में नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन

कौशाम्बी। जनपद न्यायाधीश बृजेश कुमार मिश्र के निर्देशन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में जिला कारागार में सद्गुरू नेत्र चिकित्सालय चित्रकूट के सहयोग से 02 दिवसीय नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 284 बंदियों तथा जेल कर्मचारियों का नेत्र परीक्षण कर चश्मा व दवाओं का वितरण किया गया। गंभीर नेत्र रोग से ग्रसित बंदियों को उच्चतर चिकित्सा केन्द्रों के लिए भेजा गया इस अवसर पर अपर जनपद न्यायाधीश जिला विधिक सेवा प्राधिकरण देवेश चन्द्र गुप्ता, जेल अधीक्षक भूपेश सिंह एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पैनल अधिवक्ता उपेन्द्रनाथ शुक्ल उपस्थित रहे।

सड़क खोद कर फरार हो गए ठेकेदार

बेनीराम कटरा कौशाम्बी। चायल तहसील के ग्राम पंचायत बरियावा से चौराडीह जाने वाली सड़क निर्माण के नाम पर ठेकेदार सड़क की खुदाई करने के बाद भाग खड़े हुए हैं कई महीने बीत जाने के बाद सड़क पर काम नहीं लग सका है सड़कों की स्थिति उखड़ गई है और सड़क की खुदाई से निकले मलबे को पटरियों पर डाल दिया गया है जिससे पूरी तरह से आवागमन बाधित है ग्रामीणों को आवागमन में दिक्कत होती है आए दिन ग्रामीण सड़क पर गिर जाते हैं लेकिन विभागीय अधिकारी सड़क मरम्मत करने को तैयार नहीं है दोनों तरफ से पटरी खोद दी गयी बरियावा गांव से एक किलोमीटर बीच में सड़क में कोई जगह नहीं है इसीलिए वहां चालकों को आए दिन दिक्कत होती है खराब सड़क को देखने के लिए जिम्मेदार अधिकारी ध्यान नहीं दे रहे है।

40 वाहनों का यातायात पुलिस ने किया ई चालान

बेनीराम कटरा कौशांबी। यातायात व्यवस्था सुचारू करने के उद्देश्य से यातायात उपनिरीक्षक जितेंद्र प्रताप सिंह हमराही गणेश प्रसाद नरेंद्र सिंह सुखलाल ने करारी थाना क्षेत्र के थाम्भा चौराहे पर शुक्रवार को दो पहिया और चार पहिया वाहनों की चेकिंग की चेकिंग के दौरान हेलमेट न लगाने वाले चालकों रजिस्ट्रेशन लाइसेंस वाहन में मौजूद न होने पर और नंबर प्लेट में नंबर ना लिखे होने पर 40 वाहन गलत पाए गए जिनका पुलिस ने ईचालान किया है यातायात पुलिस द्वारा वाहनों की चेकिंग किए जाने से सड़क पर अफरा तफरी का माहौल बना रहा है

तड़पते रहते हैं मरीज नहीं आते पीएचसी में डॉक्टर

नेवादा कौशांबी। सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था पूरी तरह चौपट है सरकारी अस्पताल में अधीक्षक नहीं पहुंचते हैं तमाम बीमारियों से ग्रसित मरीज डॉक्टर के चेंबर के बाहर इंतजार करते रहते हैं लेकिन अस्पताल में डॉक्टर मरीज को नहीं मिल पाते हैं जिससे मजबूर मरीज निजी अवैध नर्सिंग होम से इलाज करने को मजबूर होते हैं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नेवादा में शुक्रवार को पूरे दिन बीत जाने के बाद अधीक्षक अस्पताल नहीं पहुंचे हैं दर्जनों मरीज उनके कमरे के बाहर घण्टो इंतजार करते रहे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नेवादा की व्यवस्था चौपट हो चुकी है लोगों ने स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक का ध्यान आकृष्ट करते हुए व्यवस्था सुधारे जाने की मांग की है।

दूसरी पत्नी से शादी के बाद बच्चों की परवरिश से मुकरा पति

करारी कौशांबी। करारी थाना क्षेत्र के दुगार्पुर के रहने वाले रोशन लाल की पहली पत्नी की मौत 4 वर्षों पूर्व हो गई थी जिस पर रोशनलाल ने श्रीमती से उसकी और उसके बच्चों की परवरिश का वादा करके दूसरी शादी कर ली श्रीमती से शादी के वक्त रोशन लाल ने श्रीमती को भरोसा दिलाया था कि उसके पहले पति के बच्चों की परवरिश की जाएगी उनकी शादियां की जाएंगी और उन्हें अपनी संपत्ति में हिस्सा बंटवारा दिया जाएगा लेकिन अब रोशन लाल दूसरी पत्नी के बच्चों की परिवरिश करने से इनकार कर दिया है इसी बात को लेकर आए दिन दूसरी पत्नी और उसके बच्चों के साथ गाली गलौज मारपीट और उत्पीड़न होता है रोशन लाल की पहली पत्नी की बेटियां और रोशन लाल ने मिलकर दूसरी पत्नी श्रीमती और उसके बेटे को गाली गलौज कर मारपीट की है जिससे पीड़ित होकर श्रीमती ने थाना पुलिस को तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की है लेकिन कई दिन बीत जाने के बाद मामले में कोई कार्रवाई होती नहीं दिख रही है।

20 एवं 21 अगस्त को भरवारी में मौजूद रहेंगे हड्डी रोग विशेषज्ञ

भरवारी कौशाम्बी। दिनाक 20 एवम 21अगस्त को गरीबों के मसीहा सुप्रसिद्ध हड्डी रोग विशेषज्ञ एवम लोक प्रिय चिकित्सक मयंक केशरवानी लोगो की गंभीर से गंभीर बीमारियों की देख भाल के लिए प्रत्यक्ष रूप से भरवारी स्थित बृजेश मेमोरियल अस्पताल में मौजूद रहेंगे। ऐसे में जिस किसी भी ब्यक्ति को अपनी बीमारी को दिखाना हो तो वह रविवार की सुबह 9 बजे से शाम को 6 बजे तक दिखा सकते है इतना ही नहीं गंभीर बीमारियों से ग्रसित व्यक्ति भी अन्य चिकित्सकों को ऑन लाइन भी अपना मर्ज दिखा सकते है 21 अगस्त को भी हड्डी रोग विशेषज्ञ मौजूद रहेंगे।

नहीं जानते तिरंगे का सम्मान करना तो कैसे चलाएंगे देश!

भाजपा नेताओं को कौन सिखाएगा राष्ट्रीय ध्वज पकड़ने का तरीका

भरवारी कौशाम्बी। भारतीय जनता पार्टी के जिला कोषाध्यक्ष अशोक केसरवानी को राष्ट्रीय ध्वज पकड़ने का तरीका कौन सिखाएगा भाजपा जिला कोषाध्यक्ष उल्टा ध्वज लेकर यह घूम रहे हैं तिरंगे का केसरिया रंग ऊपर होता है लेकिन यह तिरंगा में हरा रंग ऊपर लेकर टहल रहे हैं जब इन्हें राष्ट्रीय ध्वज पकड़ने का तरीका नहीं मालूम है भाजपा के जिला कोषाध्यक्ष होने के बाद इन्हें राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान नहीं मालूम है लेकिन फिर भी देश चलाने की बात करते हैं।

भाजपा जिला पंचायत अध्यक्ष के खिलाफ गिरा अविश्वास प्रस्ताव

अखंड भारत संदेश

26 सदस्यों में केवल अध्यक्ष ने किया मतदान, नहीं पहुंचे कोई सदस्य

कौशाम्बी। भाजपा जिला पंचायत अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव फिर एक बार बच गया जिला पंचायत के 26 सदस्य में से केवल अध्यक्ष ने मतदान किया,पक्ष और विपक्ष के एक भी सदस्य मतदान के लिए नही पहुंचे और वर्तमान जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर की कुर्सी एक बार फिर से बच गई। जिला पंचायत कौशाम्बी के निर्वाचित 26 में से 20 जिला पंचायत सदस्यों ने डीएम को अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव के लिए हलफनामा सौंपा था,जिसके बाद डीएम सुजीत कुमार ने 19 अगस्त को अविश्वास प्रस्ताव के लिए तारीख निर्धारित की थी और शनिवार को मतदान के लिए जिला पंचायत पूरी तरह से पुलिस और प्रशासन की सुरक्षा में था,लेकिन अविश्वास प्रस्ताव में विपक्ष का एक भी जिला पंचायत सदस्य नहीं पंहुचा जबकि सिर्फ जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर ने ही अपने मत का प्रयोग किया। जिसके बाद कल्पना सोनकर के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव नही आ सका और विपक्ष का अविश्वास प्रस्ताव गिर गया और कल्पना सोनकर की कुर्सी एक बार फिर बच गई,वही अविश्वास प्रस्ताव नही आने से भाजपा समर्थको में खुशी की लहर दिखाई पड़ रही है। वही विपक्ष के लोगो का आरोप है कि विपक्षी सदस्य के खिलाफ फर्जी मुकदमे दर्ज कराकर उन्हें दबाव में लिए गया है,और पुलिस ने मुकदमे में शामिल नाम वाले सदस्यों की गिरफ्तारी का भी प्लान बना रखा था,वही कुछ सदस्यों को प्रशासन की नोटिस और एक सदस्य का तो घर भी जमींदोज करवा दिया गया,इसलिए कोई भी सदस्य नहीं पहुंचा।विपक्ष का आरोप है कि गलत तरीका अपनाकर अध्यक्ष ने प्रशासन के साथ मिलकर सदस्यो पर मुकदमा दर्ज कराया है जिला पंचायत अध्यक्ष के खिलाफ दम देने वाली हस्तियां किनारे हो गई हैं जिससे जिला पंचायत अध्यक्ष के पति पूर्व ब्लॉक प्रमुख जितेंद्र सोनकर की गणित सफल हो गई है लेकिन दबाव के चलते जिला पंचायत अध्यक्ष की कुर्सी बचाने वाली भाजपा को आगामी लोकसभा चुनाव में बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी।

स्कूटी पाकर चहकी कौशांबी की बेटियां

अखंड भारत संदेश

पूर्व की भांति इस बार भी पूर्व विधायक संजय गुप्ता ने अपने जन्मदिन पर पांच होनहार बेटियों को स्कूटी प्रदान किया

कौशाम्बी चायल के पूर्व विधायक संजय कुमार गुप्ता का 50 वां जन्मदिन बड़े धूमधाम से मिलन गेस्ट हाउस सराय अकिल में मनाया गया आयोजक समर रस्तोगी एवं उमेश केशरवानी आदि ने पूर्व विधायक संजय कुमार गुप्ता का भव्य स्वागत करते हुए एक कवि सम्मेलन एवं सहभोज का आयोजन किया इस अवसर पर पूरे क्षेत्र से हजारों की संख्या में लोग एकत्रित होकर प्रख्यात हास्य कवि राधे श्याम भारती सुजीत जायसवाल उर्फ जीत सहित आधा दर्जन कवियों के काव्य पाठ का आनंद लिया पूर्व की भांति इस बार भी पूर्व विधायक संजय गुप्ता ने पांच होनहार बेटियों को स्कूटी प्रदान करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि मेरी बेटी मेरा स्वाभिमान अभियान के तहत उच्च शिक्षा को प्रमोट करने हेतु रिद्धि सिद्धि फाउंडेशन सभी बेटियों के साथ खड़ा रहेगा संसाधन के अभाव में कोई भी बेटी उच्च शिक्षा से वंचित नहीं रहेगी उपस्थित जनमानस में रिद्धि सिद्धि फाउंडेशन के इस कार्य की सराहना करते हुए पूर्व विधायक संजय गुप्ता का आभार प्रकट किया कार्यक्रम में पूर्व विधायक लाल बहादुर सहित भाजपा के तमाम पदाधिकारी उपस्थित रहे कार्यक्रम का संयोजन समर रस्तोगी गौरी शंकर मोदनवाल उमेश केसरवानी अखिल रस्तोगी आदि ने किया एवं संचालन कौशांबी के युवा कवि सुजीत जायसवाल उर्फ जीत ने किया।

सदस्यता अभियान पर वृहद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कौशाम्बी। प्रयागराज मंडल प्रयागराज अंतर्गत जनपद कौशांबी में सदस्यता अभियान पर एक वृहद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मंडलीय उपयुक्त एवं उपनिबंधक प्रयागराज, कौशांबी जनपद के सहायक आयुक्त, सीईओ इलाहाबाद डिस्टिक कोऑपरेटिव बैंक, जनपद के समस्त सहायक विकास अधिकारी सहकारिता सभी शाखों के शाखा प्रबंधन तथा बी पैक्स के सचिवों ने भाग लिया उन्हें सहकारी स्वयं सेवक की नियुक्ति से लेकर सदस्यता अभियान की प्रतिदिन की ऑफलाइन फॉर्म ऑन एवं अंशदान को अपनी अपनी शाखों में जमा करने तथा सुनियोजित ढंग से नए सदस्यों को बनाने एवं कम से कम प्रति समिति एक लाख का अंशदान सृजित करने हेतु उतने ही मात्रा में सदस्यता अभियान को पूर्ण करने का प्रशिक्षण दिया गया। सदस्यता वृद्धि में सचिवों द्वारा उठाए गए प्रश्नों का अक्षर सा उत्तर देते हुए उनका हर संकाओं का समाधान किया गया जिससे यह अभियान समय अंतर्गत शुरू होकर समय अवधि के अंदर ही प्रत्येक दशा में पूर्ण हो सके।

स्नान करने गया युवक गंगा नदी में डूबा मौत

अखंड भारत संदेश

मनौरी कौशांबी। गंगा नदी के फतेहपुर घाट में स्नान करने गया युवक गहरे पानी में चला गया जिससे युवक नदी में डूब गया है युवक के नदी में डूब जाने की जानकारी मिलते ही मौके पर मौजूद लोगों ने हो-हल्ला मचाया जानकारी मिलने पर परिजन भी घटनास्थल पर पहुंच गए मामले की सूचना पूरामुफ्ती पुलिस को दी गई मौके पर पहुंची पुलिस ने जल पुलिस और गोताखोरों को बुलाकर डूबे युवक को खोजने का प्रयास किया काफी प्रयास के बाद गंगा नदी से युवक को निकाला गया और उसे चिकित्सकों के पास ले गए लेकिन चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया है युवक की मौत होते ही परिवार में कोहराम मच गया है पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक प्रयागराज जिले के पूरामुफ्ती बाजार निवासी कलिक केसरवानी उम्र 14 वर्ष पुत्र नीरज केसरवानी फतेहपुर गंगा घाट में शनिवार की सुबह 8:00 बजे गंगा स्नान करने गए थे नदी किनारे पहुंचकर कपड़ा उतारने के बाद वह नदी में स्नान करने लगे लेकिन गंगा नदी में तेज बहाव के चलते उनका पैर फिसल गया और वह संभल नहीं सके और नदी में डूबने लगे उन्होंने बचाव के लिए हो हल्ला मचाया हाथ पैर हिलाया लेकिन जब तक लोग उन्हें बचाने पहुंचे तब तक वह नदी में डूब चुके थे जैसे ही युवक के डूबने की जानकारी नदी किनारे मौजूद लोगों को लगी मामले की जानकारी लोगो ने पुलिस और युवक के परिजनों को दी जैसे ही परिजनों को मामले की जानकारी मिली रोते बिलखते परिजन भी गंगा घाट पहुंच गए मामले की सूचना पूरामुफ्ती पुलिस को दी गई पूरामुफ्ती थानाध्यक्ष उपेंद्र सिंह ने जल पुलिस और गोताखोरों की मदद से डूबे युवक को नदी से खोज निकाला है और उसे अस्पताल पहुंचाया है लेकिन डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया है परिवार में कोहराम मच गया है पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

कड़ा से मंझनपुर तक 28 अगस्त को कावड़ यात्रा का आयोजन

कौशाम्बी। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी कड़ा धाम से मंझनपुर तक 28 मार्च को हिंदू जागरण मंच के तत्वाधान में कावड़ यात्रा का आयोजन किया जा रहा है जिला अधिकारी को पत्र देते हुए हिंदू जागरण मंच के अध्यक्ष अवधेश नारायण शुक्ल ने कहां कि सावन के आखिरी सोमवार के दिन शीतला धाम कड़ा से कावड़ धार्मिक यात्रा का आयोजन किया गया है यह कावड़ यात्रा सैनी सिराथू करनपुर चौराहा सौराई होते हुए मंझनपुर कस्बे के आठवीं शताब्दी के प्राचीन शिव मंदिर पहुंचेगी जहां शिव भक्त पूजा अर्चन जलाभिषेक करेंगे कावड़ यात्रा के रास्ते में साफ सफाई पेयजल की व्यवस्था और यातायात व्यवस्था प्रबंधन की मांग उन्होंने डीएम से की है।

चायल संपूर्ण समाधान दिवस में सीडीओ ने सुनी जनशिकायतें

अखंड भारत संदेश

चायल कौशांबी। समाधान दिवस चायल में फरियादियों की समस्याओं को मुख्य विकास अधिकारी ने सुना है और उसके निस्तारण के लिए अधीनस्थों को निर्देशित किया है हालांकि शनिवार को आयोजित तहसील समाधान दिवस में फरियादियों की संख्या कम रही वही लोगों की चचाओं पर जाएं तो शिकायतकताओं का यह भी आरोप रहता है कि शिकायत तो की जाती है पर निस्तारण के लिए उन्हें के पास भेज दिया जाता है जिनसे पहले भी न्याय नहीं मिल सका है और जिन राजस्व कर्मियों के खिलाफ शिकायतें की गई है उन्हें ही जांच सौंप दी जाती है जिसके चलते पीड़ितों को न्याय नहीं मिलता और तहसील समाधान दिवस में पीड़ितों की संख्या दिनों दिन कम हो रही है।

चोरी से पेड़ काटने की समाधान दिवस में शिकायत

चायल कौशांबी। तहसील समाधान दिवस चायल में पहुंचे फरियादी बशीर अहमद पुत्र शरीफ अहमद निवासी पट्टी नरवर ने बताया कि 50 वर्ष पुराने उसके दो विशाल पेड़ खड़े थे और गांव के भुल्लू के दो बेटों ने विशाल पुराने पेड़ को चोरी से पेड़ को काट लिया गया है और लकड़ी उठा ले गए हैं अधिकारियों ने सांदीपन घाट थाना को जांच करने के बाद कार्रवाई का निर्देश दिया है।

सरकारी जमीन पर हो रही प्लाटिंग रोकने की मांग

चायल कौशाम्बी। तहसील समाधान दिवस चायल में बसुहार गांव निवासी अशोक कुमार ने शिकायती प्रार्थना पत्र देते हुए बताया कि चायल तहसील के बसुहार गांव की आराजी संख्या 417 में कब्जा करके भू माफिया प्लाटिंग कर रहे हैं सरकारी जमीन की बिक्री भू माफिया कर रहे हैं उसने बताया कि अधिकारियों के निर्देश पर 15 दिन पहले नायब तहसीलदार सरकारी जमीन की जाच करने मौके पर पहुंचे थे उन्होंने निर्देश दिया था कि अवैध प्लाटिंग को खाली कराया जाए मौके में रखा ईटा बालू गिट्टी हटाया जाए और सरकारी जमीन पर कानूनी कार्यवाही की जाए सरकारी जमीन कब्जा करने वाले भू माफिया को दंडित किया जाए लेकिन 15 दिन बीत जाने के बाद मौके पर पहुंचे नायब तहसीलदार कार्रवाई नहीं कर साके हैं जिससे भू माफिया सरकारी जमीन को प्लांट बनाकर बेच रहा है शिकायतकर्ता ने भू माफिया पर कठोर कार्रवाई की मांग की है।

तहसील दिवस पहुंचकर मोची ने मांगा पीएम आवास

कौशांबी। तहसील समाधान दिवस चायल में मूरतगंज विकासखंड क्षेत्र के बेरूवा गांव के शिव भवन पुत्र श्यामलाल मोची ने प्रार्थना पत्र देकर अधिकारियों को बताया कि वह बेहद गरीब व्यक्ति है लेकिन उसके बाद भी उसे पीएम आवास नहीं मिला है जिससे उसके पक्के घर का सपना नहीं पूरा हो सका है पीएम आवास दिलाए जाने की मांग की है।

संपादकीय

भाजपा के मिशन दक्षिण की बुनियाद दरक गई है?

आज सभी टी वी चैनल बार-बार उत्तर के राज्यों में भाजपा की चुनावी रणनीति , सीटों का आंकलन बता रहे है और दक्षिण की ओर कोई नहीं मुड़ रहा है तो उसका कारण क्या कर्नाटक की हार के साथ ही भाजपा के मिशन दक्षिण की बुनियाद दरक गई है जो चैनल वाले उसकी चर्चा नहीं करना चाहते । इस समय देश की राजनीति में दक्षिण के 5 राज्यों (कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आंध्र और तेलंगाना) की हिस्सेदारी करीब 22-24% है। दक्षिण भारत में विधानसभा की करीब 900 और लोकसभा की 130 सीटें हैं।भाजपा के पास अभी दक्षिण से 29 सांसद हैं और पार्टी ने इस बार 60 लोकसभा सीटें जीतने का लक्ष्य रखा है। मगर इस रास्ते में भाजपा के लिए सबसे बड़ी चुनौती है- दक्षिण में कोई स्थानीय कद्दावर नेता न होना। येदियुरप्पा के रूप में एकमात्र मजबूत नेता कर्नाटक में हैं, पर वे भी सक्रिय सियासत से विदा हो चुके हैं। केरल, तमिलनाडु, आंध्र, पुद्दुचेरी में स्थापित या चमत्कारी नेता न होने से आगामी लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा की मुश्किलें बढ़ रही हैं।यदि एक मोटा-मोटा आंकलन करे दक्षिणी राज्यों में अभी भाजपा-कांग्रेस कहां खड़ी हैं तो कुल लोकसभा सीटों में द. भारत के 5 राज्यों (कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आंध्र और तेलंगाना) की करीब 24% हिस्सेदारी है। 130 में से भाजपा के पास 29 और कांग्रेस के पास 27 लोकसभा सीटें हैं। बाकी पर क्षेत्रीय दलों का कब्जा है। वोट शेयर देखें तो दक्षिण में भाजपा का प्रति राज्य औसत 18.64% और कांग्रेस का 22.72% है।चुनाव आयोग के आंकड़े बताते हैं कि कर्नाटक के नतीजों का आकलन यदि लोकसभा सीटों के हिसाब से किया जाए तो भाजपा को वहां की 18 लोकसभा सीटों का नुकसान हो सकता है। हालांकि, लोकसभा व विधानसभा के चुनाव में वोटिंग अलग मुद्दों पर होती है, पर कई सीटों पर जिस बड़े अंतर से भाजपा हारी है, वह पार्टी की चिंता बढ़ा सकता है। वैसे देखा जाय तो भाजपा को हमेशा से ही अपने कोर वोट बैंक पर जबरदस्त भरोसा रहा है। लेकिन कर्नाटक में भाजपा का कोर वोट बैंक (लिंगायत) टूट गया। कित्तूर कर्नाटक (मुंबई-कर्नाटक) जहां लिंगायत अच्छी तादाद में हैं, वहां भाजपा को बड़ा झटका लगा है और कई सीटें गंवानी पड़ी हैं। सूत्रों का कहना है कि कर्नाटक में हार की वजह की फौरी समीक्षा में यह तथ्य उजागर हुआ है कि त्रिकोणीय मुकाबले में अब तक भाजपा को बढ़त हासिल होती रही है, पर कर्नाटक में यह सिलसिला टूट गया। क्योंकि दक्षिणी राज्यों में कांग्रेस कर्नाटक और केरल में काफी मजबूत स्थिति में है।केंद्र और कर्नाटक सरकार दलित, ओबीसी, ट्राइबल समुदाय के कल्याण के लिए खुद को समर्पित बताती रही है, पर कर्नाटक में भाजपा को इसका खास लाभ नहीं हुआ। कर्नाटक चुनाव में मंडल (वोक्कालिग्गा और लिंगायत) को 2-2% आरक्षण देने का मुद्दा नहीं चला। साथ ही कमंडल (बजरंगबली) का मुद्दा भी क्लिक नहीं किया। मिशन दक्षिण के लिए अभी भाजपा के पास सियासी हथियार यही हैं, जिसकी धार यहां कुंद पड़ गई। स्नेह मिलन और अन्य कार्यक्रमों के जरिए भाजपा अल्पसंख्यकों (मुस्लिमों) में पैठ बनाने की कोशिश कर रही थी। पिछले साल हैदराबाद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में इसका प्रस्ताव भी पार्टी ने पारित किया था। इसके बावजूद कर्नाटक चुनाव के नतीजे यह साबित करते हैं कि अल्पसंख्यकों के लिए भाजपा अभी तक न सिर्फ अछूत बनी हुई है, बल्कि अल्पसंख्यक एकजुट होकर भाजपा के खिलाफ वोट डाल रहे हैं। देखा जाय तो भाजपा दक्षिण की सीटों पर जीत हासिल करने के लिए विस्तारक तैयार कर रही है। लेकिन दक्षिणपंथी पार्टी के लिए दक्षिण में पैर जमाना एक चुनौती बनता जा रहा है। यहां के 5 राज्य आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, पुड्डुचेरी और केरल में कुल लोकसभा की 130 सीटें आती हैं। इसमें से भाजपा के पास 29 सीटें हैं। इन 29 सीटों में से भी अकेले कर्नाटक में 25 सीटें आती हैं। बाकी चार सीटें तेलंगाना से आती हैं। बाकी के तीन राज्यों की एक भी लोकसभा सीट भाजपा के पास नहीं है। इसी तरह इन राज्यों में कुल मिलाकर विधानसभा की 923 सीटें आती हैं। इसमें से भाजपा के हिस्से में सिर्फ 134 सीटें आती हैं। इन 134 सीटों में से भी अकेले कर्नाटक से 127 सीटें आती हैं। ऐसे में बड़ा सवाल उठता है कि अगर उत्तर भारत में भाजपा की कुछ सीटें कम हुईं तो उसकी भरपाई कैसे हो पाएगी। माना जा रहा है कि बिहार में नीतीश कुमार के भाजपा से अलग होने और लालू के साथ महागठबंधन में शामिल होने का नुक्सान भाजपा को उठाना पड़ सकता है। यही हाल महाराष्ट्र का भी बताया जा रहा है। बंगाल में पिछली बार भाजपा को 18 लोकसभा सीटें मिली थीं। इस बार इसमें भी कमी आने की आशंका है। हिमाचल, उत्तराखंड , दिल्ली , हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ में लगभग सभी सीटें जीत चुकी भाजपा तीसरी बार भी इसी तरह सफल हो, ऐसा यकीन तो भाजपा को भी नहीं है। पुलवामा जैसा कुछ अगर 2024 के चुनाव से ठीक पहले नहीं हुआ या प्रधानमंत्री मोदी के तरकश से अगर कोई नया तीर नहीं निकला तो फिर भाजपा का क्या होगा। कुछ जानकारों का कहना है कि भाजपा ने दक्षिण पर जोर देने की रणनीति बनाई है। केरल में चर्च का साथ लिया जा रहा है। वैसे तमिलनाडु में ए.आई.डी.एम.के. के कमजोर होने से भाजपा को वहां पैर पसारने का मौका मिला है , आंध्र प्रदेश में टी.डी.पी. के चन्द्र बाबू नायडू भाजपा.से हाथ मिलाने को तत्पर दिखाई देते हैं लेकिन भाजपा फिल्म स्टार पवन कल्याण के साथ गठबंधन बनाना चाहती है, तेलंगाना में भाजपा ने पिछली बार चार लोकसभा सीटें जीती थीं लेकिन इस बार इस साल दिसंबर में वहां होने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा पूरा जोर लगाना चाहती है ताकि लोकसभा चुनावों के लिए मजबूत आधार तैयार किया जा सके। गौरतलब है कि तमिलनाडु में भाजपा को हिंदुओं की पार्टी माना जाता है। वहां 70 फीसदी से ज्यादा दलित हैं जो हिंदूवादी भाजपा को पसंद नहीं करते हैं। भाजपा भी इसे समझ रही है। अब वह हिंदू मंदिरों की बात नहीं कर रही। वह सभी धर्मों के मंदिरों के जीर्णोद्धार की बात कर रही है। केरल में शशि थरूर पर भाजपा की नजर है जो कांग्रेस से नाराज चल रहे हैं लेकिन पाला पलटेंगे ऐसा कहना मुश्किल है।

आजादी के इंतजार में आधी आबादी

कविता त्रिवेदी

भारतीय समाज में अभी भी यह अवधारणा है कि समाज पुरुषों से चलता है। लड़की का होना ही एक बोझ माना जाता है। उसके जन्म होने के पहले ही उसे खत्म करने की साजिश शुरू हो जाती है और पैदा हो जाए तो बचपन से अधिकतर परिवारों में वे लड़की होने के अपराध बोध से ग्रस्त रहती हैं। यह मानकर चला जाता है कि वह पराया धन है। देश स्वतंत्रता प्राप्ति की 76वीं वर्षगांठ मनाया है। हमने अपना 'अमृत महोत्सव' भी मना लिया। 'विश्व गुरु' होने को लालायित हम हर क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि कर रहे हैं। विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था से ऊपर छलांग लगाने की लालसा भी है, लेकिन 'यूनाइटेड नेशंस डेवलेपमेंट प्रोग्राम' (यूएनडीपी) के 'जेंडर सोशल इंडेक्स' की ताजा रिपोर्ट कुछ और बताती है। 'यूएनडीपी' ने चार आयामों :राजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक और भौतिक अखंडता में महिलाओं के प्रति लोगों के नजरिये को ट्रैक किया। इसकी रिपोर्ट के मुताबिक लगभग 90फीसदी लोग अभी भी महिलाओं के खिलाफ कम-से-कम एक पूर्वाग्रह रखते हैं। दूसरे देशों की तुलना में भारतीय महिलाओं के लिए यह कहीं ज्यादा है। यहां राजनीतिक पूर्वाग्रह 68.9 प्रतिशत, शैक्षणिक 38.5 प्रतिशत, आर्थिक 75.1 प्रतिशत और भौतिक अखंडता पर पूर्वाग्रह 92.4 प्रतिशत है। 'यूएनडीपी' की रिपोर्ट को मैदानी अनुभवों से जोड़कर देखें तो तीन महीने से जातीय हिंसा की आग में जलकर खाक हो रहा उत्तर-पूर्व का राज्य मणिपुर दिखाई देता है। वहां की राज्यपाल महामहिम अनुसुइया उइके ने भी स्वीकार किया है कि ऐसी हिंसा उन्होंने अपने जीवन में कभी नहीं देखी। इस जातिगत हिंसा का शिकार कौन बना? दोनों ओर की महिलाएं ही? वे न आतंकवादी थीं, न राष्ट्रवाद विरोधी और न ही खूनी या डकैत। वे किसी की मां, बहन एवं बेटी थीं। एक कारगिल के जवान की पत्नी थीं, तो एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की पत्नी थीं। ऐसी कई बहन-बेटियां मारी गईं या जला दी गईं। कैसे और किसने? उसी समुदायों के पुरुषों ने जिन्होंने यह मान रखा है कि किसी भी महिला पर अत्याचार करना उनका जन्मजात हक है और ऐसा करने में उन्हें न कोई शर्म है, न समाज, शासन, प्रशासन का कोई भय।

भारतीय महिलाओं की समाज में उल्लेखनीय भूमिका है। हर वर्ग की स्त्रियां अपने शारीरिक,सामाजिक, व्यावहारिक एवं आर्थिक योगदान से समाज को, परिवार को, देश को परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सहायता प्रदान कर रही हैं। बावजूद इसके कश्मीर से कन्याकुमारी हो, या राजस्थान से मणिपुर, महिलाओं पर होने वाले उत्पीड़न एवं अत्याचारों की संख्या 'ट्रिलियन डालर इकानामी' की तरह बढ़ती ही जा रही है और इस मामले में कोई भी वर्ग अछूता नहीं है। भारतीय समाज में अभी भी यह अवधारणा है कि समाज पुरुषों से चलता है। लड़की का होना ही एक बोझ माना जाता है। उसके जन्म होने के पहले ही उसे खत्म करने की साजिश शुरू हो जाती है और पैदा हो जाए तो बचपन से अधिकतर परिवारों में वे लड़की होने के अपराध बोध से ग्रस्त रहती हैं। यह मानकर चला जाता है कि वह पराया धन है। दान दहेज दे, एक सुखी जीवन देने की आस में लड़कियों के परिवार के माता-पिता विवाह कर भार मुक्त हो जाते हैं, लेकिन शादी करके अपने पति के घर गई लड़की वैचारिक तौर पर परिवार के हर व्यक्ति से समझौता करती है। उसे यह शिक्षा दी जाती है कि वह निभाना एवं निभना सीखे। वहीं पारिवारिक संप्रभुता का वर्चस्व किसी भी महिला के साथ होने वाले मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक उत्पीड़न का कारण बनता है। बलात जबरदस्ती, दहेज प्रताड़ना, गाली देना, भूखे रखना, शराब पीकर महिलाओं को मारना, अपहरण हो लापता होना-ऐसे अनेक मामले हैं जिसने देश में महिलाओं का जीना दूभर किया हुआ है। आज देश में महिलाओं का कार्य क्षेत्र बढ़ा है। वे हर मोर्चे पर आत्मविश्वास से काम कर रही हैं, लेकिन उनका प्रतिशत काफी कम है। उपयुक्त वातावरण का न मिल पाना उन्हें घर बैठने को मजबूर कर देता है। महिलाओं एवं लड़कियों के प्रति बढ़ रहे दुराचारों के मामले में बढ़ोतरी चिंता का विषय तो है। एक भययुक्त वातावरण में देश की महिलाएं जीने को मजबूर हैं, चाहे वे कितने ही उच्च पद पर आसीन क्यों न हो। राजनीति का क्षेत्र देश का सबसे मुखर क्षेत्र है। कहने-सुनने की आजादी एक प्रजातांत्रिक देश होने के कारण सबको मिलती है। उसमें भी सरपंच महिला हो या जनपद अध्यक्ष, यहां तक कि महिला पार्षद तक का प्रतिनिधित्व उनके पति करते हैं, न कि निर्वाचित महिलाएं। वर्तमान में संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 14.4 प्रतिशत है जो महिलाओं की संख्या की तुलना में बहुत कम है। आर्थिक स्वावलंबन के लिहाज से देश की 60 प्रतिशत महिलाएं खेती जैसे असंगठित क्षेत्रों से जुड़ी हैं, दिहाड़ी पर काम करती हैं एवं उन्हें स्थायी कार्य का अवसर ही नहीं मिलता। ऐसी ही स्थिति शहरी क्षेत्रों में है जहां गांवों से पलायन कर रोजी-रोटी की तलाश में अपने परिवारों के साथ आई महिलाएं हैं जिनमें घरों में काम करने वाली महिलाओं की संख्या ज्यादा है। वे स्वीकार करती हैं कि पति अच्छे आचरण वाला हो तो ठीक, वरना प्राप्त पैसा भी बेकार हो जाता है। यही नहीं वे घर के लिए कोई चीजें खरीदें तो वे कम कीमत बताती हैं, क्योंकि वह घर परिवार में कलह एवं विवाद का कारण बन सकता है। देश में पुरुषों के मुकाबले कामकाजी महिलाओं की हिस्सेदारी 84 प्रतिशत के मुकाबले मात्र 24 प्रतिशत है, जो बांग्लादेश एवं नेपाल से भी कम है।

शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा खानपान जरूरी है, लेकिन अधिकतर घरों में पुरुषों को भोजन कराने के बाद ही महिलाओं के खाने की परम्परा है। सीमित भोजन का पकना भी महिलाओं को पूर्ण आहार नहीं दे पाता। कमोबेश वही स्थिति घर की लड़की की भी होती है। अधिकतर महिलाएं एवं लड़कियां कुपोषण का शिकार होती हैं। यह स्थिति गांवों से ज्यादा शहरों में है। यही कारण है कि स्वास्थ्य एवं जीवन रक्षा इंडेक्स में भारत 150 वें नंबर पर है। आजादी के 76 सालों में, माना कि महिलाओं की स्थिति में बहुत बदलाव आया है, लेकिन आबादी का आधा हिस्सा होने के बाद भी वे उस वैचारिक, सामाजिक, आर्थिक एवं स्वयं निर्णय लेने की प्रक्रिया में काफी हद तक नीचे और सामान्यतः वंचित हैं। आकांक्षा, इच्छा एवं कुछ कर गुजरने की चाहत हर महिला अपने मन में संजोए रहती है, लेकिन कम ही उस मुकाम तक पहुंच पाती हैं। जहां आबादी का आधा हिस्सा महिलाएं हों और वे हर स्तर पर प्रताड़ित हों तो सबसे बड़ी जरूरत है, सरकार हर स्तर पर महिलाओं को आगे लाए। समाज में व्याप्त असुरक्षा एवं भय के वातावरण से उन्हें मुक्ति मिले। आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से संपन्न महिलाएं ही देश की तस्वीर बदल सकती हैं। वह तभी हो पाएगा, जब देश की महिलाओं को भी आजादी मिले।

(लेखिका सामाजिक, राजनीतिक चिंतक हैं।)

ताप-विद्युत बनाम 'अक्षय-ऊर्जा' : कोयले की कालिख

दीपमाला पटैल

उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के सिंगरौली-सोनभद्र के कुछ इलाकों में लगभग 9 थर्मल-पावर प्लांट हैं। यहां 2019-20 में फ्लाई-ऐश बांध टूटने की तीन घटनाओं ने थर्मल-पावर प्लांट की राख के रख-रखाव पर सवाल खड़े किये थे। उसी क्षेत्र में बार-बार राख-बांध टूटने की घटनाएं और राख का ढेर, सिंगरौली-सोनभद्र में रहने वाले लोगों को कई वर्षों से वायु-प्रदूषण का प्रतिकूल प्रभाव झेलना पड़ रहा है। भारत का लक्ष्य 2022 तक 'अक्षय ऊर्जा' यानी रिन्यूएबल एनर्जी (अक्षय ऊर्जा या नवीकरणीय ऊर्जा के उदाहरण हैंझबायोगैस, बायोमास, सौर ऊर्जा इत्यादि) से 175 गीगावॉट बिजली उत्पादन करने का था। भारत सरकार ने भी 2030 तक अक्षय ऊर्जा क्षमता को 500 गीगावॉट तक बढ़ाने की प्रतिबद्धता जताई है। 'रिन्यूएबल एनर्जी' के लक्ष्य को हासिल करने के लिए देश को हर साल लगभग डेढ़ से दो लाख करोड़ रुपए के निवेश की जरूरत है, लेकिन अभी इस क्षेत्र में सालाना 75 हजार करोड़ रुपए का ही निवेश हो पा रहा है। यह 'अक्षय ऊर्जा' के लक्ष्य को हासिल करने के लिए नाकाफी है। भारत के प्रधानमंत्री ने 26 वें 'संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क सम्मेलन' (सीओपी- 26) में घोषणा की थी कि भारत 2030 तक अपनी गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता को 500 गीगावाट तक पहुंचाएगा। यही नहीं, 2030 तक अपनी 50 प्रतिशत ऊर्जा की जरूरत 'अक्षय ऊर्जा' से पूरी करेगा और कुल अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में एक अरब टन की कमी करेगा। भारत, अपनी अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता (इन्टेंसिटी) को 45 प्रतिशत से भी कम करेगा और 2070 तक 'नेट जीरो' का लक्ष्य हासिल करेगा। सवाल है कि 'मैदान' में क्या हो रहा है? इसी माह की शुरूआत में उत्तरप्रदेश सरकार ने सोनभद्र जिले के ओबरा में 18,000 करोड़ रुपये की लागत से 800 मेगावाट की दो 'अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल ओबरा-डी थर्मल-पावर परियोजनाओं' को मंजूरी दी है, जिसका उद्देश्य राज्य के लोगों को सस्ती बिजली प्रदान करना बताया जा रहा है। ऊर्जा मंत्री ने यह भी कहा है कि थर्मल-पावर उत्पादन के मामले में उत्तरप्रदेश की मौजूदा क्षमता 7,000 मेगावाट है और ये दो संयंत्र मौजूदा क्षमता का लगभग 25 प्रतिशत योगदान देंगे। एक नयी परियोजना-1600 मेगावाट क्षमता वाली ओबरा-डी को 18000 करोड़ रुपये की लागत की मंजूरी दी गई। इस प्रस्तावित परियोजना के लिए सरकार द्वारा पहले ही 500 एकड़ जमीन उपलब्ध करवाई जा चुकी है और यदि आवश्यकता हुई तो और अधिक जमीन आवंटित की जाएगी। सरकार के इस निर्णय से क्षेत्र के लोगों के स्वास्थ्य और पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। इस प्रस्तावित परियोजना में राज्य सरकार और केंद्र सरकार के स्वामित्व वाली बिजली जनरेटर 'एनटीपीसी' के साथ आधी-आधी साझेदार होगी। परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए जहां 30 प्रतिशत इक्विटी दी जाएगी, वहीं शेष 70 प्रतिशत राशि की व्यवस्था वित्तीय संस्थानों से की जाएगी। इसका मतलब यह है कि बैंकों में जमा जनता का पैसा इस परियोजना पर लगाया जाएगा, जिससे थर्मल-पावर प्लांट के आसपास रहने वाली जनता का ही नुकसान होगा। 'डाउन टू अर्थ' पत्रिका में छपे एक लेख के अनुसार उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के सिंगरौली-सोनभद्र के कुछ इलाकों में लगभग 9 थर्मल-पावर प्लांट हैं। यहां 2019-20 में फ्लाई-ऐश बांध टूटने की तीन घटनाओं ने थर्मल-पावर प्लांट की राख के रख-रखाव पर सवाल खड़े किये थे। उसी क्षेत्र में बार-बार राख-बांध टूटने की घटनाएं और राख का ढेर, सिंगरौली-सोनभद्र में रहने वाले लोगों को कई वर्षों से वायु-प्रदूषण का प्रतिकूल प्रभाव झेलना पड़ रहा है। अतिरिक्त राख के कारण अक्सर ये बांध लीक या ओवरफ्लो हो जाते हैं, जिससे आसपास रहने वाले लोगों के लिए तबाही मच जाती है। इससे भूजल और सतही जल प्रदूषित भी होता है। इस क्षेत्र की पहचान 'केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड' द्वारा गंभीर रूप से प्रदूषित क्षेत्र के रूप में की गई है। इसके बावजूद राज्य में 6600 मेगावाट की पांच परियोजनाएं-ओबरा-सी(1320 मेगावाट), जवाहरपुर सुपर थर्मल-पॉवर स्टेशन (1320 मेगावाट), घाटमपुर थर्मल-पॉवर स्टेशन (1980 मेगावाट), मेजा थर्मल-पॉवर स्टेशन (1320 मेगावाट) और पनकी थर्मल-पॉवर स्टेशन (660 मेगावाट) निमार्णाधीन हैं। यही नहीं, जुलाई 2014 में इलाहाबाद जिले में करछना थर्मल-पावर स्टेशन को स्वीकृति मिली थी जिसकी अनुमानित क्षमता 1320 मेगावाट थी। अभी तक इस पावर-प्लांट का निर्माण शुरू नहीं हुआ है। 'ओबरा-डी थर्मल-पावर परियोजना' वर्ष 2027 में बिजली उत्पादन शुरू करेगी। रिजर्व बैंक ने 2022-23 में मुद्रा एवं वित्त पर एक रिपोर्ट जारी की है जिसमें जलवायु से संबंधित अनेक आयामों को शामिल किया गया है। इसमें कहा गया है कि अगर भारत को 2070 तक कार्बन के शून्य लक्ष्य को हासिल करना है तो एनर्जी मिक्सिंग का दौर तेजी से लाना होगा, किन्तु कोयला आधारित नए बिजली संयंत्रों का निर्माण शुरू करने से 'रिन्यूएबल ऊर्जा' लक्ष्यों की प्राप्ति में और विलम्ब होगा। यह 'रिन्यूएबल उद्योग' के विकास को भी खतरे में डाल देगा। देश में 2022-23 में कोयला आधारित बिजली संयंत्रों से बिजली उत्पादन में पिछले वर्ष की तुलना में 8.87त्न की वृद्धि देखी गई है। वर्ष 2023-24 के लिए बिजली उत्पादन का लक्ष्य 1750 अरब यूनिट तय किया गया था, जिसमें से 75 फीसदी से अधिक थर्मल स्त्रोतों, मुख्य रूप से कोयले से होने की उम्मीद है। ऐसे में भारत में बिजली के लिए कोयले पर निर्भरता कम कैसे हो सकती है? उत्तरप्रदेश की बिजली उत्पादन की बात करें तो अप्रैल 2023 में 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' में छपे लेख के अनुसार उत्तरप्रदेश सरकार ने दावा किया है कि राज्य के स्वामित्व वाले थर्मल-पावर प्लांट 39,691 यूनिट का उत्पादन करने में कामयाब रहे हैं जो अब तक का सबसे ज्यादा बिजली उत्पादन का रिकॉर्ड है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में, राज्य के स्वामित्व वाले बिजली संयंत्रों जैसे अनपरा ओबरा, पारीछा और हरदुआगंज थर्मल परियोजनाओं ने कुल 3,969.10 करोड़ यूनिट बिजली पैदा की जो 2021-22 में 3502.20 करोड़ यूनिट के कुल सकल बिजली उत्पादन से 13.33त्न अधिक है। राज्य के बिजली संयंत्रों ने 76.44फीसदी 'प्लांट लोड फैक्टर' (पीएलएफ- औसत लोड और पीक लोड का अंश) पर काम किया है। यह 2019-20, 2020-21 और 2021-22 में क्रमशः 68.80फीसदी, 69.71फीसदी और 71.82फीसदी से अधिक था। अकेले अनपरा थर्मल-पावर स्टेशन की इकाइयों ने रिकॉर्ड 95.75फीसदी वार्षिक 'पीएलएफ' पर बिजली का उत्पादन किया। इस इकाई ने 838.80 करोड़ यूनिट का अब तक का सबसे अधिक सकल विद्युत उत्पादन किया। ओबरा जैसे कई पावर-प्लांट हैं जिनकी वजह से उस क्षेत्र की जमीन, वहां रहने वाले जीव-जंतु और समुदाय को सामाजिक और पर्यावरणीय नुकसान का सामना करना पड़ा है। थर्मल-पावर प्लांट से निकलने वाली राख हवा में घुलकर लोगों व जीव-जंतुओं के स्वास्थ्य, जल-स्त्रोत, फसल को हानि पहुंचाती है। लोकहित और पर्यावरण सरंक्षण की दृष्टि से ओबरा-डी थर्मल-पावर प्लांट पर किसी भी वित्तीय संस्था/बैंक द्वारा अपना पैसा नहीं लगाना चाहिए। ऐसा करना जनता के साथ विकास के नाम पर खिलवाड़ करना होगा।

कला में उपभोक्तावाद और गांधी का संदेश

ज्योति साही

उदार लोकतंत्र में जो लोग सत्ता में रहते हैं वे राजनीतिक उद्देश्यों के लिए पूंजीवादी उद्योग का इस्तेमाल अपने निहित स्वार्थों के लिए करते हैं। उपभोक्ता विचारधारा उत्पन्न करते समय पारंपरिक संस्कृति को महत्वपूर्ण बनाया जाता है। कला रूपों का उपयोग आम विरासत को वैध बनाने और निजीकरण करने के लिए किया जाता है, चाहे वह जैविक हो या सांस्कृतिक। हमें इन दिनों बताया गया है कि नई वैश्विक व्यवस्था में भारत की प्रगति बहुत शानदार है। अभी 15 अगस्त को ही भारत ने अपना 77वां स्वतंत्रता दिवस मनाया है। आज के राजनीतिक माहौल में हम शायद ही कभी 1948 में दिए महात्मा गांधी के उस 'सूत्र' को याद करते हैं जो उन्होंने हमें भारत की आबादी के सबसे गरीब और सबसे कम विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के कल्याण की कल्पना करने के लिए यह पूछते हुए दिया था कि 'क्या आप जिस कदम पर विचार कर रहे हैं वह उनके लिए कोई काम आने वाला है?' हमें आज इस सूत्र की पहले से कहीं ज्यादा जरूरत है। भारत को रचनात्मक कल्पना के एक नए संग्रह की आवश्यकता है ताकि यह तय किया जा सके कि जमीन से जुड़े लोगों के रचनात्मक विकास पर सांस्कृतिक हस्तक्षेप का क्या प्रभाव पड़ सकता है। हम खुद को यह भूलने की अनुमति नहीं दे सकते कि जलवायु परिवर्तन के कारण पारिस्थितिक संकट उन लोगों की तुलना में गरीबों को अधिक प्रभावित करेगा जो हमारी आधुनिक दुनिया के उपभोक्ता समाज को आकार दे रहे हैं। एक कलाकार के रूप में लेखक को विशेष रूप से 'गरीबों की संस्कृति और कला' में रुचि है। लेखक की राय है कि जिसे हम 'लोक कला' कहते हैं, उसके बारे में जो विशिष्ट तथ्य है वह भौतिकवाद से इसकी स्वतंत्रता है। लोक सौंदर्यशास्त्र भौतिक धन से जुड़ा नहीं है। यह ऐसे समय में जब हम स्वतंत्रता का उत्सव मना रहे हैं, तो यह याद रखना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। किस चीज से आजादी? उपनिवेशवाद ने संस्कृति की समृद्धि को न पहचानते हुए उसे गरीब बना दिया, लेकिन औद्योगिकवाद एक अन्य प्रकार की दरिद्रता है जहां अमीर सोचते हैं कि वे गरीबों की संस्कृति का विनियोजन कर संस्कृति को नियंत्रित करते हैं। 'अपने पास कुछ न रखने' यानी अपरिग्रह में एक मूल्य है जो जमीन से जुड़े रहने वालों की विशिष्ट संस्कृति में है, उसके केंद्र में निहित है। यह अपरिग्रह उस प्रकार की अति सूक्ष्मता और सादगी का सार है। यह एक ऐसी संस्कृति की विशेषता है जो चीजों को रखने के बारे में सोचती नहीं है। वर्धा के समीप सेवाग्राम में 'मध्यवर्ती प्रौद्योगिकी' पर एक बैठक 1978 में आयोजित की गई थी। 'मैसेज ऑफ बापू'ज हट' (बापू की कुटिया का संदेश) विषय पर आयोजित इस गांधीवादी संगोष्ठी का उद्घाटन इवान इलिच ने किया था। लेखक ने एक बार अपने छात्रों को इवान इलिच के विचारों के बारे में बताते हुए पूछा कि क्या उन्हें लगता है कि इस तरह 'बापू की झोपड़ी' के संदर्भ में दिए गए संदेश को भारतीय संदर्भ में उपयुक्त माना जा सकता है? लेखक को पता था कि उसके कई छात्र एक आधुनिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो इस तरह की झोपड़ी को 'अविकसित' के नजरिए से देखकर अस्वीकार करती है। 'वनार्कुलर आर्किटेक्चर' को नया स्वरूप देने का प्रयास आउटडेटेड और रोमांटिक माना जाता है जो राजनीतिक आजादी के बाद वैश्विक प्राथमिकताओं के लिए प्रयास कर रहे आधुनिक भारत के लिए अप्रासंगिक है। कोविड महामारी से बहुत पहले ही आधुनिकता की महामारी ने अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई को और चौड़ा करना शुरू कर दिया था। 'अंबानी सांस्कृतिक केंद्र' का उद्देश्य 'भारतीय कलाओं को संरक्षित और बढ़ावा देना' है जो हाल ही में बेंगलुरु में खोले गए कला और फोटोग्राफी संग्रहालय (म्यूजियम ऑफ आर्ट एंड फोटोग्रॉफी- एमएपी) से मेल खाता है। इस तरह की पहल आर्थिक रूप से कॉर्पोरेट उद्योग द्वारा समर्थित है।

नारी सम्मान की न्यायिक शब्दावली

न्यायिक प्रक्रिया के दौरान नारी का सम्मान बनाये रखने के लिये सुप्रीम कोर्ट ने नई शब्दावली दी है। अनेक ऐसे शब्द जो नारी की गरिमा को गिराने वाले होते हैं, उसकी बजाय शीर्ष अदालत ने सम्मानजनक शब्द दिये हैं। एक हैंडबुक के जरिये सर्वोच्च अदालत ने जो शब्द इस्तेमाल में लेने के लिये कहा है, आशा है कि अब कचहरी पहुंचने वाली महिलाओं को न्याय पाने के लिये अपनी प्रतिष्ठा के साथ समझौता नहीं करना होगा। शादी, तलाक, लिव इन रिलेशनशिप, यौन उत्पीड़न, प्रताड़ना, सम्पत्ति, विवाद होने पर बच्चों की कस्टडी आदि कई तरह के मुकदमों की सुनवाई के दौरान महिला पक्षकारों का बेहद अपमानजनक भाषावली से सामना होता है जिसके कारण उसके लिये न्याय को भूलकर अपनी प्रतिष्ठा को बचाना प्राथमिकता बन जाता है। पुरुष प्रधान समाज द्वारा रचित महिलाओं की आबरू को तार-तार करने वाले कई शब्द, वाक्य और मुहावरे समाज में खूब प्रचलित हैं। महिलाओं को संबोधित करने वाले ऐसे रुढ़िवादी शब्दों को अदालत की शब्दावली से हटाकर सुप्रीम कोर्ट ने जो नये शब्द दिये हैं, उम्मीद की जानी चाहिये कि वे कचहरी की जिरह और दस्तावेजों में ही सीमित न रहकर पूरे समाज में इस्तेमाल होंगे ताकि औरतों को कोर्ट ही नहीं वरन पूरे समाज में अपमानित हुए बिना संबोधित होने का मौका मिले। हमारे यहां महिलाओं के स्थान के बारे में चाहे जितनी महिमा गाई जाये, सच्चाई यही है कि भारतीय समाज औरतों को वह सम्मान नहीं देता जिसकी आधी आबादी हकदार है। बहुत से देशों का भी यह हाल हो सकता है। यह किसी एक धर्म या वर्ग से जुड़ी महिलाओं की भी बात नहीं है। थोड़े से अंश को छोड़ दिया जाये तो ज्यादातर महिलाएं देश में लैंगिक असमानता का शिकार हैं। फिर वे चाहें निम्न वर्ग की हों या मध्य वर्ग अथवा उच्च वर्ग की। शिक्षा ने कुछ फर्क जरूर डाला है पर असलियत यही है कि ज्यादातर महिलाएं अपने वाजिब अधिकारों की तरह ही सम्मान से काफी दूर हैं। पहले पिता या भाई के नियंत्रण में रहती स्त्रियां बाद में पति और अंततः बुढ़ापे में पति के साथ रहते हुए या विधवा के रूप में पुत्रों पर आश्रित जीवन जीती हैं। उनकी भौतिक जरूरतों को लेकर होने वाली दुश्वारियां तो अपनी जगह पर हैं, घर हो या बाहर, वे आजीवन जिल्लत भरा जीवन जीती हैं। उन्हें जिन शब्दों से संबोधित किया जाता है वह अक्सर अपमानजनक होता है। घरों के बाहर भी महिलाओं को लेकर कोई बहुत अच्छी भाषा का उपयोग नहीं होता।

अशोक पब्लिक स्कूल का वाहन पलटकर खाई में गिरा

18 में दो बच्चे घायल- सम्भागीय निरीक्षक ने कोतवाली कर्वी में दी रिपोर्ट लिखाने को तहरीर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। अशोक पब्लिक स्कूल के एक वाहन में मानक के विपरीत बच्चों से भरी वैन खाई में पलट गई। इससे दो बच्चे गम्भीर रुप से घायल हो गये हैं। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर बच्चों को वैन से सुरक्षित निकालकर भेजा। इस मामले में एआरटीओ कार्यालय के सम्भागीय निरीक्षक प्राविधिक ने कोतवाली कर्वी में तहरीर दी है।

ये हादसा कर्वी कोतवाली के खोह पेट्रोल पम्प के पास शनिवार को अपरान्ह एक बजे हुआ। बताया गया कि अशोक पब्लिक स्कूल के वाहन में मानक के विपरीत बच्चों को ठूंस-ठूंसकर भरकर ले जाया जा रहा था। खोह पेट्रोल पम्प के पास अचानक वाहन बेकाबू होकर खाई में चला गया। इससे वाहन में सवार 18 बच्चों में दो बच्चे घायल हो गये। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर खाई में पलटे वाहन से बच्चों को सुरक्षित निकालकर भेजा।

इस मामले में सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी कार्यालय के सम्भागीय निरीक्षक प्राविधिक गुलाबचन्द्र पुत्र गया प्रसाद निवासी फतेहपुर बेला तुलसीपुर कौशाम्बी ने कर्वी कोतवाल को दी तहरीर में कहा है कि 19 अगस्त को अपरान्ह एक बजे अशोक पब्लिक स्कूल खोह का स्कूल वाहन दुर्घटना ग्रस्त होने पर वे मौके पर पहुंचे। दुर्घटना ग्रस्त वाहन का निरीक्षण किया। वाहन का पंजीयन यूपी 96सी-9658 टाटा मैजिक के परीक्षण से पता चला कि वाहन आठ अगस्त को फिटनेस को कार्यालय आया था। निरीक्षण में पता चला कि वाहन में कैमरा एवं स्पीड गर्वनर फिट नहीं है। वाहन में ये यंत्र फिट कराने को निर्देश दिये गये थे। अभी तक वाहन में कैमरा एवं स्पीड गर्वनर फिट कराकर निरीक्षण को नहीं पेश किया।

उन्होंने कहा कि जाहिर है कि अशोक पब्लिक स्कूल खोह के प्रबंधक अशोक कुमार गुप्ता व प्रधानाचार्य काशी प्रसाद शुक्ला ने मोटरयान अधिनियम नियमावली का जानबूझकर उल्लंघन किया है। वाहन को बिना फिटनेस कराये बच्चों को लाने-ले जाने की अनुमति दी। इससे तकनीकी रुप से असुरक्षित वाहन दुर्घटना ग्रस्त हुआ और बच्चों की जान जोखिम में पड गई। उन्होंने अशोक पब्लिक स्कूल खोह के प्रबंधक व प्रधानाचार्य पर रिपोर्ट दर्जकर कार्यवाही की मांग की है।

डीएम के निदेर्शों का हुआ तगडा असर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द के निदेर्शों का ही असर है कि सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी विवेक शुक्ला सक्रिय हुए। उन्होंने अशोक पब्लिक स्कूल के वाहन के खाई में पलटने व बच्चों की जानजोखिम में जाने के आसार को लेकर कोतवाली कर्वी में तहरीर दिलाई है। जिलाधिकारी ने कल ही एआरटीओ को स्कूल वाहनों को चेक करने के निर्देश दिये थे। उनके निदेर्शों के असर के चलते अशोक पब्लिक स्कूल के प्रबंधक अशोक कुमार गुप्ता व प्रधानाचार्य काशी प्रसाद शुक्ला के खिलाफ उचित धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कराने की तहरीर दी गई है। इसके पहले जिले में और भी स्कूल वाहनों के दुर्घटना ग्रस्त होने पर ऐसी कार्यवाही कभी नहीं हुई।

बच्चों को 15 सितंबर तक मिलेगी विटामिन ए की खुराक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले में नौ माह से पांच वर्ष तक के बच्चों को विटामिन ए की खुराक देने को भाजपा जिलाध्यक्ष चन्द्र प्रकाश खरे व सहकारिता अध्यक्ष पंकज अग्रवाल तथा सीएमओ डा भूपेश द्विवेदी ने बच्चे को विटामिन ए की खुराक पिलाकर अभियान का शुभारंभ किया।

शनिवार को सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी ने बताया कि प्रत्येक छह माह के अंतराल पर ये अभियान चलता है। अभियान में नौ माह से लेकर पांच वर्ष तक के बच्चों को विटामिन ए की खुराक दी जाती है। जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डॉ मुकेश पहाड़ी, डीएमसी यूनिसेफ दिलीप द्विवेदी, वीसीसीएम अर्बन कोर्डिनेटर रूपनारायण, नरोत्तम सिंह एवं संबंधित अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

दो के कब्जे से ढाई किलो गांजा बरामद

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर मादक पदार्थों की तस्करी एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में पुलिस ने दो लोगों के कब्जे से ढाई किलो गांजा बरामद किया।

शनिवार को प्रभारी निरीक्षक सरधुवा दीपेन्द्र सिंह की अगुवाई में दरोगा राजेश कुमार राय की टीम ने भकोली पुत्र भागवत निवासी गडौली के कब्जे से एक किलो तीन सौ ग्राम गांजा बरामद कर गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया।

कर्वी कोतवाल गुलाब त्रिपाठी की अगुवाई में दरोगा राकेश मौर्य की टीम ने दीपक कुमार बाजपेयी पुत्र रामनरेश बाजपेयी निवासी रुपौलिहा टोला कस्बा राजापुर के कब्जे से एक किलो दो सौ ग्राम गांजा बरामद कर गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ कोतवाली कर्वी में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया।

पुलिस ने दबोचे वांछित महिला व पुरुष

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में पुलिस ने एक वांछित महिला व वांछित पुरुष को गिरफ्तार किया।

शनिवार को बहिलपुरवा थाने के दरोगा विजय बहादुर सिंह की टीम ने दहेज हत्या के मामले में वांछित सलीमिया पत्नी सलीम निवासी मुस्लिम पुरवा को गिरफ्तार किया। टीम में दरोगा विजयबहादुर यादव, दरोगा रामप्रवेश, दीवान रघुराज सिंह, महिला सिपाही गुड़िया शामिल रहे।

परिक्रमा मार्ग चैकी प्रभारी प्रवीण कुमार सिंह की टीम ने अपहरण व पॉक्सो एक्ट के वांछित अभय उर्फ छोटेलाल पुत्र सुभाष चिकवा निवासी आर्यनगर थाना मानिकपुर को गिरफ्तार किया। टीम में चैकी प्रभारी परिक्रमा मार्ग प्रवीण कुमार सिंह, सिपाही शिवम मिश्रा शामिल रहे।

पूर्व सांसद बालकुमार पटेल गये जेल, 65 लाख की थी ठगी, मसुरी के रमाकान्त ने लिखाई थी रिपोर्ट

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पूर्व सपा सांसद बाल कुमार पटेल को ठगी के मामले में एमपी एमएलए कोर्ट ने बांदा जेल भेजा है। बांदा के कारोबारी/मसुरी गांव के रमाकान्त त्रिपाठी ने पूर्व सांसद पर 65 लाख की ठगी का आरोप लगाया था। इस मामले में कोतवाली बांदा में मामला दर्ज था। कोर्ट से तलब होने के बाद भी पूर्व सांसद हाजिर नहीं हुए। एनबीडब्ल्यू वारंट जारी होने के बाद कोर्ट में सरेंडर किया था। कोर्ट ने न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। सोमवार को मामले की सुनवाई होगी।

शनिवार को बांदा एमपी-एमएलए कोर्ट ने दस्यु सम्राट ददुआ के भाई/सपा के पूर्व सांसद बाल कुमार पटेल को ठगी मामले में जेल भेजा है। बांदा जिले के मसुरी गांव के रमाकांत त्रिपाठी ने बालू के धंधे में पैसे लगाने के नाम पर बालकुमार पटेल पर 65 लाख रुपये की धोखाधड़ी का आरोप लगाया था। मामले में रमाकांत त्रिपाठी ने 2020 में कोतवाली बांदा में 419, 420 और 406 के तहत मामला दर्ज कराया था।

इस मामले में कोर्ट ने पूर्व सांसद को हाजिर न होने पर गैर जमानती वारंट जारी किया था, जब कोर्ट ने एनबीडब्ल्यू जारी किया तो शुक्रवार को पूर्व सांसद बाल कुमार पटेल कोर्ट में सरेंडर हुए। कोर्ट ने उन्हें जेल भेज दिया। सोमवार को पूर्व सांसद की जमानत पर कोर्ट में सुनवाई होगी।

सरकार बदलते ही बुलडोजर की दिशा जायेगी बदल : अखिलेश यादव

फतेहपुर। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधा और कहा कि सरकार बदलते ही बुलडोजर की दिशा बदल जाएगी। सपा मुखिया अखिलेश यादव शुक्रवार को लोक जागरण अभियान के तहत फतेहपुर में पार्टी के प्रशिक्षण शिविर को संबोधित कर रहे थे।

इस दौरान उन्होंने कहा कि बुलडोजर वाली भाजपा सरकार सबसे बड़ी भूमाफिया भाजपा सरकार है। अयोध्या में भाजपा नेताओं ने सबसे ज्यादा जमीन पर कब्जा किया है। पिछड़े, दलितों, अल्पसंख्यकों पर अन्याय, अत्याचार कर रही है। लेकिन, याद रखें बुलडोजर का दिमाग नहीं होता है। सरकार बदलेगी तो बुलडोजर की दिशा बदल जाएगी। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने उत्तर प्रदेश को बर्बाद कर दिया है। बिजली, स्वास्थ्य, पुलिस सब में भारी भ्रष्टाचार है। भाजपा की विचारधारा के लोगों और उनके मातृ संगठन ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में हुए भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध किया था। उसी को छिपाने के लिए अब घर-घर झंडा लगाने का काम करते हैं। भाजपा के लोगों ने अंग्रेजो के खिलाफ भारत छोड़ो आंदोलन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, क्रांतिकारियों और समाजवादियों का साथ नहीं दिया था। उन्होंने कहा कि केंद्र की सरकार में आने के बाद भाजपा नए तरीके का भारत छोड़ो आंदोलन चला रही है। भाजपा के तमाम करीबी उद्योगपति बैंकों से पैसा लेकर भारत छोड़ गए। बेंगलुरु के उद्योगपति से लेकर गुजरात के कारोबारियों तक की लम्बी सूची है। जनता यह सब जानती है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने डीजल, पेट्रोल, रसोई गैस के दाम बहुत बढ़ा दिए हैं। महंगाई आसमान पर है। भाजपा गरीबों की जेब काटकर अमीरों की जेब भर रही है। ससपा मुखिया ने कहा कि भाजपा सरकार के विकास कार्यों में भारी भ्रष्टाचार हुआ है। सड़कों में गड्ढे भरे पड़े है। केवल 100 रुपये का राशन देकर गरीबों को धोखा दे रही है।

किसानों की आय दुगनी नहीं हुई। खेती का लागत मूल्य दुगना हो गया। अखिलेश यादव ने कहा कि बिजली नहीं आती है लेकिन सरकार भारी भरकम बिजली का बिल भेज देती है। बड़े पैमाने पर लूट और भ्रष्टाचार है। स्वास्थ्य सेवायें खराब हो चुकी है। गरीबों को दवा, इलाज नहीं मिल रहा है।

अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने नौजवानों को धोखा दिया है। समाजवादी पार्टी की सरकार आएगी तो अग्निवीर योजना की जगह नौजवानों को पूरी नौकरी देंगे।

उन्होंने कहा कि भाजपा दरारजीवी पार्टी है। ये समाज में दरार पैदा कर राजनीति करते हैं। इंडिया गठबंधन से घबराए हुए हैं। भाजपा अपनी सत्ता बचाने और वोट के लिए लोगों और पार्टियों में दरार डालने का काम करती है।

नकली दवा के कारोबारी को छापेमारी कर मप्र पुलिस ने दबोचा

कई ट्रक नकली व प्रतिबंधित दवायें मिलीं

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कर्वी कोतवाली के बस स्टैंड शंकर ढाबा के पास गली में स्थित पीताम्बरा मेडिकल स्टोर में नकली दवाओं को लेकर कारोबारी के घर में छापेमारी हुई।

शुक्रवार की रात एक बजे मप्र पुलिस ने बडे पैमाने पर पीताम्बरा मेडिकल स्टोर शंकर ढाबा की गली में स्थित नकली दवा के कारोबारी पंकज गुप्ता के घर में छापेमारी की। छापेमारी में पंकज गुप्ता भागकर बगल की छत में कूद गया। पुलिस ने काफी जद्दोजहद के बाद उसे

गिरफ्तार किया।

एमपी पुलिस की छापेमारी से घबराये नकली दवा कारोबारी के बारे में मप्र पुलिस ने बताया कि उसका नकली दवाओं का कारोबार मप्र के सतना-रीवा आदि जिलों में फैला है। नकली व प्रतिबंधित दवाओं का ये बड़ा कारोबार करता है। इसके कई गोदामों से कई ट्रक नकली दवायें बरामद हुई हैं।

पुलिस ने बताया कि इसके नकली दवाओं के कारोबार में इसका ससुर माखनलाल अग्रहरि भी हिस्सेदार है। ये फिलहाल अपने ससुर के मकान में रहकर पीताम्बरा मेडिकल स्टोर खोले हुए है। ये मूल रुप से बबेरु का रहने वाला है। पुलिस को नकली दवाओं के कारोबारी पंकज गुप्ता से पूंछताछ में महत्वपूर्ण जानकारी मिलने के आसार हैं।

किसान की करंट चपेट में आने से हुई मौत, रात भर बिजली खंभे से चिपका रहा शव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बहिलपुरवा थाना क्षेत्र के ऐचवारा के मजरा मनोहर बाबा पुरवा में बीती रात करंट की चपेट में आने से युवा किसान की मौत होने पर सदर विधायक अनिल प्रधान ने पोस्टमार्टम हाउस पहुंचकर परिजनों को सांत्वना दी। शुक्रवार की रात करंट की चपेट में आने से वह रात भर विद्युत लाइन से चिपका रहा। सवेरे खेतों की ओर गये लोगों ने देखा तो वह मृत मिला। सूचना पर पुलिस ने पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजा। मनोहर बाबा पुरवा के भूरेलाल वर्मा का पुत्र रमेश उर्फ छोटू (26) शुक्रवार की देर शाम घर से खाना खाकर खेत की रखवाली को गया था। घर से कुछ दूरी पर धान की रोपाई कराई थी। रात में अन्ना मवेशियों से फसल बचाने को रोजाना खेत पर जाता था। शुक्रवार को ही विद्युत विभाग की टीम बिजली लाइन से टकरा रहे पेड़ों की छंटाई कर रहे थे। शाम को नीम का पेड छांटने को तार नीचे कर दिया था। पेड़ की डाले काटी थी, लेकिन तार उसी तरह नीचे पड़ी रही प्लास्टिक कोटेड तार कहीं से कटा होने से करंट आ रहा था। रात में अंधेरे में निकलते समय रमेश करंट की चपेट में आ गया। दोनों हाथ झुलस गए। आसपास किसी के न होने से वह रात भर बिजली लाइन में चिपका रहा। मृतक छह भाइयों में चैथे नंबर का था, एक बहन है, उसकी शादी नहीं हुई। पिता दिव्यांग है। परिवार का भरण-पोषण उसके जिम्मे था। मां संवरिया देवी का रो-रोकर बुरा हाल है।

टीम गठित कर मौके पर निपटायें समस्यायें: डीएम

सम्पूर्ण समाधान दिवस में डीएम ने देखी निस्तारण आख्या

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने संपूर्ण समाधान दिवस में आई शिकायतों के निस्तारण रजिस्टर का परीक्षण कर निस्तारण आख्या देखी।

शनिवार को मानिकपुर तहसील सभागार में सम्पूर्ण समाधान दिवस की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन समस्याओं का निस्तारण हो रहा है। उस समस्या के ग्रस्त व्यक्ति को भी बतायें, ताकि समस्या ग्रस्त व्यक्ति समस्या निस्तारण से संतुष्ट हो सके। उन्होंने जिला स्तरीय अधिकारियों से कहा कि शासन ने निर्धारित समय सीमा के भीतर

समस्या निस्तारण के निर्देश दिये हैं। शासन की मंशानुसार गुणवत्ता से समस्यायें निपटाई जायें। जिन विभागों की आज समस्यायें मिली हैं। मौके पर जाकर निस्तारण करायें। उन्होंने उपजिलाधिकारी व पुलिस क्षेत्राधिकारी से कहा कि भूमि संबंधी मामले में राजस्व, चकबंदी व पुलिस टीम गठित कर मौके पर भेजकर समस्या निस्तारित करायें।

जिलाधिकारी समेत जिला स्तरीय अधिकारियों ने तहसील परिसर में वृक्षारोपण किया।

इस मौके पर एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी, उप जिलाधिकारी मानिकपुर रामजन्म यादव, पुलिस क्षेत्राधिकारी राजकमल, सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी, प्रभागीय वनाधिकारी पीके त्रिपाठी, तहसीलदार मानिकपुर आलोक प्रताप सिंह, डीडीओ आरके त्रिपाठी, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ सुभाष चंद्र, बीएसए लव प्रकाश यादव, अग्रणी जिला प्रबंधक इंडियन बैंक तुलसी राम आदि मौजूद रहे।

डीएम ने ली तुलसी प्रपात की डीएफओ से जानकारी

डीएम ने पौधरोपण भी किया

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने तुलसी जलप्रपात में निर्मित ग्लास आब्जरवेटरी डेस्क (स्काई वाक) के सुन्दरीकरण का निरीक्षण किया। उन्होंने डीएफओ पीके त्रिपाठी से स्काई वॉक निर्माण में सरफेस, रेलिंग की ऊंचाई, डिजाइन टेस्टिंग, ग्लास, मेन एरो, टिकट घर आदि के बारे में जानकारी ली।

शनिवार को जिलाधिकारी ने डीएफओ से कहा कि जहां तक स्ट्रक्चर स्काई वॉक का बन रहा है, वहां तक सड़क निर्माण का प्रस्ताव बनायें। लघु सिंचाई विभाग एवं वन विभाग से कहा कि जो तुलसी जलप्रपात के ऊपर चेकडैम बना है, उसे ऊंचा कराया जाए। ये देखा

जाए कि उस चेकडैम के पहले और एक चेकडैम का निर्माण हो सकता हो तो व्यवस्था करें।

जिलाधिकारी ने कहा कि मुख्यमंत्री के निर्देश हैं कि इको टूरिज्म बनाया जा रहा है, ताकि बाहर से आने वाले पर्यटकों को सौंदर्य देखने को मिले। जिले में ये उप्र का का पहला प्रोजेक्ट होगा, जो पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण सुंदर स्थान देखने को मिलेगा। प्रयास हैं कि जिले में धार्मिक नगरी को देखते हुए इको टूरिज्म को कैसे बढ़ावा मिले। तमाम कार्य पर्यटन विभाग करा रहा है। जिलाधिकारी ने तुलसी जलप्रपात परिसर में हरिशंकरी पौधरोपण किया।

इस मौके पर डीएफओ पीके त्रिपाठी, तहसीलदार मानिकपुर आलोक प्रताप सिंह, थानाध्यक्ष मारकुंडी अनिल कुमार आदि मौजूद रहे।

लोकेशन गैंग के सरगना/गैंगेस्टर एक्ट के वांछित को दबोचा

गिट्टी-बालू आदि की देते थे लोकेशन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अवैध परिवहन पर प्रभावी नियंत्रण को हो रही कार्यवाही में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी व सीओ राजापुर श्रीमती निष्ठा उपाध्याय की देखरेख में प्रभारी निरीक्षक राजापुर भास्कर मिश्रा व प्रभारी निरीक्षक सरधुवा दीपेन्द्र कुमार सिंह की संयुक्त टीम ने गैंगेस्टर एक्ट के वांछित/लोकेशन गैंग के सरगना को दबोचा है।

शनिवार को प्रभारी निरीक्षक राजापुर भास्कर मिश्रा एवं प्रभारी निरीक्षक सरधुवा दीपेन्द्र कुमार सिंह की संयुक्त टीम ने गैंगेस्टर एक्ट में वांछित/लोकेशन गैंग

सरगना इन्द्रेश कुमार उर्फ गुड्डू यादव पुत्र लल्लू प्रसाद निवासी मनीपुर भटेहरी थाना ऊंचाहार जिला रायबरेली को राजापुर कस्बे के महादेव धर्मकांटा के पास से दबोचा।

ये अपराधी चित्रकूट, प्रयागराज एवं रायबरेली के कुछ अपराधी किस्म के लोग पिछले कुछ महीनों से संगठित गिरोह बनाकर आर्थिक व भौतिक लाभ लेने की गरज से बालू, गिट्टी का अवैध ढंग से बिना रवन्ना, ओवरलोड ट्रकों को खनिज, परिवहन, वाणिज्य एवं पुलिस अधिकारियों की लोकेशन ट्रेस करके जिले की सीमा से बाहर भेजने में मदद करते थे। इस आरोपी समेत सात माफियाओं के खिलाफ राजापुर थाने में 14 जून 2023 को गैंगेस्टर एक्ट की कार्यवाही हुई थी। टीम में प्रभारी निरीक्षक राजापुर भास्कर मिश्रा, प्रभारी निरीक्षक सरधुवा दीपेन्द्र कुमार सिंह, सिपाही उमेंन्द्र त्रिपाठी, राहुल पुरी शामिल रहे।

रूस ने आईसीसी अभियोजक, ब्रिटेन के मंत्रियों पर लगाए प्रतिबंध

मास्को। रूस ने अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (आईसीसी) के अभियोजक और ब्रिटेन के मंत्रियों पर नए प्रतिबंधों की घोषणा की। दरअसल, आईसीसी अभियोजक ने राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की गिरफ्तारी की मांग की थी और ब्रिटेन के मंत्रियों ने यूक्रेन पर रूसी आक्रमण का विरोध किया था, इसलिए यह कार्रवाई की गई। रूस की सरकारी समाचार एजेंसी तास ने यह जानकारी दी। रूसी विदेश मंत्रालय ने कहा कि मॉस्को ने प्रतिशोधात्मक उपाय के रूप में ब्रिटेन के 54 नागरिकों को रूस में प्रवेश करने से रोककर अपनी प्रतिबंध सूची का भी विस्तार किया है।विदेश मंत्रालय के अनुसार, इस सूची में अब ब्रिटेन की डिजिटल, संस्कृति, मीडिया और खेल मंत्री लुसी फ्रेजर भी शामिल हैं। लुसी रूस के अंतरराष्ट्रीय खेल से अलग करने की मुहिम को बढ़ावा दे रही हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, प्रतिबंध सूची में अन्य ब्रिटिश नागरिकों में बीबीसी, गार्जियन मीडिया ग्रुप और डेली टेलीग्राफ के पत्रकार, आईसीसी के अभियोजक करीम खान शामिल हैं। करीम खान पुतिन के लिए गिरफ्तारी वारंट जारी करने में शामिल थे। रूसी विदेश मंत्रालय ने कहा, हमारे नागरिकों और घरेलू आर्थिक ऑपरेटरों के संबंध में एकतरफा प्रतिबंध तंत्र के सक्रिय उपयोग सहित शत्रुतापूर्ण रूसी विरोधी नीति के लंदन के आक्रामक कार्यान्वयन के जवाब में ब्रिटेन के राजनीतिक हलकों, सत्ता संरचनाओं, पेशेवर कानूनी समुदाय और मीडिया संगठन (कुल 54 व्यक्तियों) के प्रतिनिधियों को शामिल करके रूस की प्रतिबंध सूची का विस्तार करने का निर्णय लिया गया। रूसी

पाकिस्तान के गिरिजाघरों में हुए हमले में दो मुख्य संदिग्ध गिरफ्तार

लाहौर। पाकिस्तान में गिरिजाघर और ईसाई समुदाय पर हुए हालिया हमलों में शामिल दो मुख्य संदिग्ध लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पंजाब प्रांत के कार्यवाहक मुख्यमंत्री मोहसिन नकवी ने कहा कि ईशनिंदा के आरोप में 21 चर्चों और अल्पसंख्यक ईसाई समुदाय के करीब तीन दर्जन घरों पर हमलों में शामिल दो प्रमुख संदिग्धों को गिरफ्तार किया गया है। नकवी ने पंजाब के मुख्य सचिव और पुलिस महानिरीक्षक के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि दोनों ने प्रमुख संदिग्धों की गिरफ्तारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बता दें कि पंजाब की प्रांतीय राजधानी लाहौर से 130 किलोमीटर दूर फैसलाबाद जिले के जरनवाला शहर में बुधवार को ईशनिंदा के आरोप में गुस्साई भीड़ ने 21 चर्चों और ईसाई समुदाय लोगों के 35 घरों में तोड़फोड़ के बाद आग लगा दी थी। मोहसिन नकवी ने एक्स (ट्विटर) पर लिखा कि पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की मस्जिदों में शुक्रवार को अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करते हुए उपदेश दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि आज पूरे पंजाब में उपदेश अल्पसंख्यकों के अधिकारों, पवित्र कुरान और पैगंबर मुहम्मद की शिक्षाओं पर केंद्रित होंगे। जानकारी के अनुसार, हिंसा भड़कने के एक दिन बाद गुरुवार को पंजाब पुलिस ने कम से कम 140 लोगों को गिरफ्तार किया और पांच मामले दर्ज किए। पुलिस द्वारा गिरफ्तार लोगों में मुख्य संदिग्ध मुहम्मद यासीन भी शामिल है, जिसकी पहचान एक वीडियो के माध्यम से की गई थी।

पाकिस्तान के कार्यवाहक मंत्रिमंडल की पहली बैठक में अल्पसंख्यकों की रक्षा का संकल्प

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के कार्यवाहक मंत्रिमंडल की पहली बैठक में अल्पसंख्यकों की रक्षा का संकल्प लिया गया। पाकिस्तान के कार्यवाहक प्रधानमंत्री अनवर उल हक काकर ने पंजाब प्रांत में अल्पसंख्यक ईसाइयों पर हमले की निंदा कर कहा कि उनकी अंतरिम सरकार समाज में अंधेरा फैलाने वाली ताकतों का समर्थन नहीं करेगी। लाहौर से 130 किलोमीटर दूर फैसलाबाद जिले के जारनवाला कस्बे में ईशनिंदा के आरोपों को लेकर भीड़ ने बुधवार को 21 गिरजाघरों और ईसाइयों के 35 घरों में तोड़फोड़ की और आग लगा दी थी। इसके बाद से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान की आलोचना हो रही थी। शुक्रवार को कार्यवाहक मंत्रिमंडल की पहली बैठक के दौरान काकर ने कहा कि इस देश में अल्पसंख्यकों की रक्षा की जाएगी। उन्होंने कहा कि एक वर्ग से हाशिए पर पड़े लोगों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की जा सकती है, लेकिन इसका सख्ती से जवाब दिया जाएगा।

काकर ने कहा कि हम अतिवाद को इस समाज में मजबूती से हतोत्साहित करेंगे, चाहे वह किसी भी रूप में हो। हम अंधेरे की ताकतों के पक्ष में नहीं खड़े हैं। उन्होंने कहा कि उन पर अंकुश लगाया जाएगा और उन्हें कानून से नियंत्रित किया जाएगा। जब एक समूह बहुमत में है, तो उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अल्पसंख्यकों की रक्षा की जाए और उनका भरण-पोषण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। काकर ने यह भी माना कि अंतरिम सरकार के पास राष्ट्र की सेवा करने के लिए सतत जनादेश नहीं है, लेकिन दावा किया कि वह नई पहलों का समर्थन करने की कोशिश करेंगे।

भारतीय मूल के लैब मालिक को 27 साल जेल की सजा, 46.3 करोड़ डॉलर के जेनेटिक टेस्ट घोटाले में पाया गया दोषी

काठमांडू। अमेरिकी राज्य जॉर्जिया में एक भारतीय मूल के प्रयोगशाला मालिक को तीन साल से अधिक समय से मेडिकेयर को धोखा देने और 46.3 करोड़ डॉलर के आनुवंशिक परीक्षण घोटाले में शामिल होने के लिए 27 साल जेल की सजा सुनाई गई। लैबसॉल्यूशंस एलएलसी के मालिक मिनल पटेल को मेडिकेयर को धोखा देने की योजना में उनकी भूमिका के लिए शुक्रवार को 27 साल की जेल की सजा सुनाई गई। पटेल पर आरोप है कि आनुवांशिक और अन्य प्रयोगशाला परीक्षणों के जरिये, जिनकी मरीजों को आवश्यकता नहीं थी, दलाली और रिश्वत देकर 46.3 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की राशि प्राप्त किया गया था। न्याय विभाग ने कहा कि 44-वर्षीय व्यक्ति ने टेलीमार्केटिंग कॉल के जरिए मेडिकेयर लाभार्थियों को निशाना बनाने के लिए मरीजों के दलालों, टेलीमेडिसिन कंपनियों और कॉल सेंटरों के साथ साजिश रची, जिसमें झूठा दावा किया गया कि उनके पैकेज में महंगे कैंसर आनुवंशिक परीक्षण शामिल हैं। विभाग ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि मेडिकेयर लाभार्थियों द्वारा परीक्षण कराने के लिए सहमत होने के बाद पटेल ने टेलीमेडिसिन

कंपनियों से परीक्षणों को अधिकृत करने वाले डॉक्टरों के हस्ताक्षरित आदेश प्राप्त करने के लिए मरीजों के दलालों को रिश्वत का भुगतान किया। रिश्वत को छुपाने के लिए पटेल ने मरीजों के दलालों से अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा, जिसमें गलत तरीके से कहा गया था कि वे लैब सॉल्यूशंस के लिए वैध विज्ञापन सेवाएं दे रहे हैं। जुलाई 2016 से अगस्त 2019 तक लैब सॉल्यूशंस ने मेडिकेयर को 46.3 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक के दावे प्रस्तुत किए। इन दावों में हजारों चिकित्सकीय रूप से अनावश्यक आनुवंशिक परीक्षण भी शामिल थे, जिनमें से राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम ने 18.7 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक का भुगतान किया। उस समय सीमा में पटेल को धोखाधड़ी के सिलसिले में व्यक्तिगत रूप से मेडिकेयर से 2.1 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक प्राप्त हुए।

एफबीआई मियामी फील्ड ऑफिस के प्रभारी विशेष एजेंट जेफरी बी वेल्ट्री ने कहा, उन मरीजों को वैध आनुवंशिक परीक्षण और टेलीमेडिसिन सेवाओं के प्रावधान में धोखे, रिश्वत और दलाली का कोई स्थान नहीं है। उन्होंने कहा, पटेल ने एक जटिल जांच धोखाधड़ी योजना के माध्यम से मेडिकेयर से करोड़ों डॉलर की हेराफेरी की। वह अब इस अपराध की कीमत चुका रहे हैं। यह मामला ऑपरेशन डबल हेलिक्स के हिस्से के रूप में लाया गया था, जो कि आपराधिक डिवीजन के धोखाधड़ी अनुभाग की देखरेख में हेल्थ केयर फ्रॉड स्ट्राइक फोर्स के नेतृत्व में एक संघीय कानून प्रवर्तन कार्रवाई थी। प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस मामले में संपत्ति जब्ती पर सुनवाई 25 अगस्त को होगी।

इमरान की सुरक्षा को लेकर बुशरा चिंतित, कहा- जेल में दिया जा सकता है जहर; बी-क्लास सुविधाओं की मांग

वाशिंगटन। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान की पत्नी बुशरा बीबी ने अपने पति की सुरक्षा को लेकर चिंता जताई है और कहा है कि अटक जेल में उन्हें जहर दिया जा सकता है। पाक मीडिया ने यह जानकारी दी है। बुशरा बीबी ने पंजाब के गृह सचिव को पत्र भेजकर कहा कि अदालत ने संबंधित अधिकारियों को उनके पति को रावलपिंडी की अदियाला जेल में स्थानांतरित करने का निर्देश दिया है।

उन्होंने कहा, मेरे पति को बिना किसी कारण के अटक जेल में कैद कर दिया गया है। कानून के मुताबिक, मेरे पति को अदियाला जेल में स्थानांतरित किया जाना चाहिए। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को इस महीने की शुरुआत में गिरफ्तार किया गया था, जब अदालत ने उन्हें अपने 2018-22 के कार्यकाल के दौरान विदेशी गणमान्य व्यक्तियों से प्रधानमंत्री के रूप में प्राप्त सरकारी उपहारों की बिक्री से संबंधित तोशाखाना मामले में तीन साल की जेल की सजा सुनाई थी।

इसके अलावा, खान को पांच साल के लिए राजनीति से भी प्रतिबंधित कर दिया गया था।

बी-क्लास सुविधाओं की मांग की

बुशरा बीबी ने अपने पत्र में मांग की है कि पीटीआई प्रमुख को उनकी सामाजिक और राजनीतिक स्थिति के अनुसार जेल में बी श्रेणी की सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए क्योंकि वह ऑक्सफोर्ड स्नातक और राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान हैं। इस बीच, बुशरा बीबी ने यह भी कहा कि पहले भी खान की दो बार हत्या की कोशिश की जा चुकी है, लेकिन इसमें शामिल आरोपियों को अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया है।

मेरे पति को अटक जेल में जहर दिया जा सकता है: बुशरा

उन्होंने पत्र में कहा, उनकी (इमरान खान) जान अब भी खतरे में है और डर है कि मेरे पति को अटक जेल में जहर दे दिया जाएगा। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, उन्होंने कहा कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री होने के नाते उनके पति को जेल में घर का बना खाना खाने की अनुमति दी जानी चाहिए। जेल मैनुअल का उल्लेख करते हुए बुशरा ने कहा कि खान को 48 घंटे के भीतर सभी सुविधाएं प्रदान की जानी थीं, लेकिन 12 दिन बीत जाने के बाद भी उन्हें यह सुविधा प्रदान नहीं किया गया है।उन्होंने कहा, जेल नियमों के मुताबिक मेरे पति को एक निजी डॉक्टर से मेडिकल जांच कराने का अधिकार है।' उन्होंने पीटीआई प्रमुख को जेल मैनुअल के मुताबिक सुविधाएं मुहैया नहीं कराने की जांच की मांग की। इसके अलावा, पिछले हफ्ते पीटीआई कोर कमेटी ने भी इसी तरह की चिंता व्यक्त की थी कि इमरान खान 'धीमे जहर' से पीड़ित हो सकते हैं और उन्हें घर का बना खाना और पानी उपलब्ध कराने की मांग की थी।

सात बच्चों की हत्यारी नर्स को पकड़वाने में भारतीय मूल के डॉक्टर की रही अहम भूमिका

लंदन। ब्रिटेन में पैदा हुए भारतीय मूल के डॉक्टर रवि जयराम ने सात बच्चों की हत्यारी नर्स को पकड़वाने में अहम भूमिका निभाई। डॉ. रवि जयराम उन शुरुआती लोगों में से थे, जिन्होंने हत्यारी नर्स को लेकर शक जाहिर किया और इसकी शिकायत उच्च अधिकारियों से की थी। बता दें कि ब्रिटेन की एक अदालत ने शुक्रवार को नर्स को सात नवजात बच्चों की हत्या और छह की हत्या के प्रयास में दोषी ठहराया है। नर्स को सोमवार को सजा सुनाई जाएगी।

डॉ. जयराम को ऐसे हुआ था नर्स पर शक

बता दें कि उत्तरी ब्रिटेन के चेस्टर स्थित काउंटेस ऑफ चेस्टर हॉस्पिटल में काम करने वाली नर्स लूसी लेटबी (33 वर्षीय) को नवजात बच्चों की हत्या का दोषी ठहराया गया है। लूसी को पड़वाने में अहम भूमिका निभाने वाले डॉ.जयराम ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि मेरा मानना है कि मारे गए बच्चों में से तीन या चार बच्चे आज स्कूल जा रहे होते। उन्होंने बताया कि जब जून 2015 में तीन नवजात बच्चों की मौत हुई तो उन्होंने इसे लेकर चिंता जाहिर की थी। जब और बच्चों की मौत हुई तो मेरे जैसे वरिष्ठ डॉक्टरों ने कई बैठकें की और अस्पताल प्रशासन के अधिकारियों से मिलकर अपनी चिंता जाहिर की। डॉ. जयराम ने बताया कि अप्रैल 2017 में नेशनल हेल्थ सर्विस ट्रस्ट ने हमें पुलिस से इस मामले में मिलने की अनुमति दे दी। जब हमने पुलिस को बच्चों की रहस्यमयी मौतों के बारे में बताया तो पुलिस ने इसकी जांच शुरू की। पुलिस की जांच में नर्स लूसी लेटबी पर शक हुआ और पूछताछ और विस्तृत जांच के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। जांच अधिकारियों ने बताया कि लूसी ने नवजात बच्चों को मारने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाए। बता दें कि काउंटेस ऑफ चेस्टर अस्पताल में साल 2015 से 2016 के बीच 13 नवजात बच्चों की हालत बिगड़ी, जिनमें से सात की मौत हो गई और छह की बड़ी मुश्किल से जान बच सकी। जांच में पता चला कि नवजात बच्चों के वार्ड में बतौर नर्स तैनात लूसी लेटबी ने बच्चों को मारने के लिए उन्हें इंसुलिन के इंजेक्शन दिए, उनके पेट में ज्यादा हवा भर दी, उन्हें दूध की ओवरडोज दी गई, जैसे तरीके अपनाए गए।

केलोना-येलोनाइफ में आग से बचने के लिए लोग कर रहे संघर्ष, इन क्षेत्रों की आधी आबादी विस्थापित

टोरंटो कनाडा में बढ़ते जंगल की आग की वजह से केलोना और येलोनाइफ के निवासियों को अपनी जिंदगी बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। येलोनाइफ के बाहरी इलाके में जंगल की आग मंडराने के कारण उसे खाली करने की आधिकारिक समय सीमा समाप्त हो गई है, लेकिन निवासी हवाई और सड़क मार्ग से निकलने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों की लगभग आधी आबादी विस्थापित

रिकॉर्ड के अनुसार, देश में सबसे खराब आग की स्थिति की वजह से लगभग 22,000 लोग यानी कनाडा के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों की लगभग आधी आबादी विस्थापित हो गई है। पश्चिम में एक अलग आग भड़कने की वजह से केलोना और ब्रिटिश कोलंबिया पर खतरा मंडरा रहा है। यहां 24 घंटे में आग सौ गुना बढ़ गई है। अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि आग बहुत सक्रिय और बहुत अप्रत्याशित है।

संघीय सरकार को नुकसान की पूरी जानकारी नहीं:मंत्री

कनाडा के आपातकालीन तैयारी मंत्री हरजीत सज्जन ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, अपना घर छोड़ने का तनाव, यह न जानते हुए कि जब आप लौटेंगे तो वह वहां होगा या नहीं, अब हजारों लोगों द्वारा सामना की जाने वाली एक वास्तविकता है। उन्होंने कहा कि संघीय सरकार को अभी तक कनाडाई लोगों के लिए अविश्वसनीय रूप से चुनौतीपूर्ण सप्ताह में हुए नुकसान की पूरी जानकारी नहीं है।ब्रिटिश कोलंबिया के पश्चिमी प्रांत केलोना में मैकडॉगल क्रीक जंगल की आग रातोंरात काफी बढ़ जाने के बाद जीवन और संपत्तियों के लिए विशेष रूप से चिंताजनक खतरा बन गई है। बीसी वाइल्डफायर सर्विस ने कहा कि गुरुवार शाम को 1,100 हेक्टेयर में लगी आग का अब 6,800 हेक्टेयर में फैलने का अनुमान है।

सज्जन ने संवाददाताओं से कहा, हवाएं बहुत चिंताजनक थीं और हमें नहीं पता है कि चीजें कहां जा रही हैं। स्थानीय बीसी अधिकारियों ने शुक्रवार सुबह आपातकाल की स्थिति की घोषणा कर दी। अब तक 2,500 से अधिक घरों को खाली करा लिया गया है, जबकि हजारों लोगों को अल्प अवधि सूचना पर घर छोड़ने की चेतावनी दी गई है। तेजी से फैल रही आग लगभग 1,50,000 लोगों की आबादी वाले शहर को प्रभावित कर रही है ।

सोने की तस्करी में गिरफ्तार सभी चीनी नागरिकों के पास से नेपाली नागरिकता प्रमाणपत्र बरामद

काठमांडू। एक क्विंटल सोने की तस्करी में अब तक गिरफ्तार हुए सभी 12 चीनी नागरिकों के पास से नेपाली नागरिकता का प्रमाण पत्र बरामद होने के बाद इस मामले में नया मोड़ आ गया है। नागरिकता जैसे संवेदनशील दस्तावेज विदेशी नागरिकों के पास से बरामद होने पर पुलिस के लिए इसकी जांच करना और अधिक पेचीदा हो गया है। एक क्विंटल सोने की तस्करी मामले की जांच कर रही केन्द्रीय अनुसंधान ब्यूरो की तरफ से जिला अदालत में यह जानकारी दी गई है। पिछले 48 घंटों में सीआईबी ने 6 चीनी नागरिकों को सोने की तस्करी मामले में पुख्ता सबूतों के आधार पर गिरफ्तार किया है। इन सभी को कस्टडी में लेने के लिए आज जब सभी आरोपितों को जिला अदालत काठमांडू में पेश किया गया तो सरकारी वकील ने कस्टडी में लेने के कारणों का खुलासा किया।

डोनाल्ड ट्रंप को बड़ा झटका, जॉर्जिया चुनाव नतीजे पलटने के मामले में करेंगे आत्मसमर्पण

वाशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप चुनाव नतीजे पलटने के मामले में फुलटन काउंटी जेल में अगले हफ्ते आत्मसमर्पण कर सकते हैं। डोनाल्ड ट्रंप और 18 अन्य आरोपियों पर साल 2020 के राष्ट्रपति चुनाव के दौरान जॉर्जिया के चुनाव नतीजों को पलटने की कोशिश का आरोप है। सोमवार को इस मामले में आरोप तय किए गए और 25 अगस्त तक ट्रंप समेत सभी आरोपियों को आत्मसमर्पण करने के चलते हो सकता है कि ट्रंप इस पहली डिबेट में शामिल ना हो सकें। ऐसी खबरें हैं कि ट्रंप डिबेट में शामिल होने के बजाय एक ऑनलाइन इंटरव्यू में शामिल हो सकते हैं। हालांकि अभी प्रमुख उम्मीदवार हैं। बुधवार को राष्ट्रपति चुनाव की पहली डिबेट होनी हैं। अब जॉर्जिया चुनाव नतीजों को पलटने के मामले में

मामलों का सामना कर रहे हैं और इन मामलों में उन पर कुल 91 आरोप लगे हैं। जॉर्जिया मामले में ट्रंप पर आरोप है कि उन्होंने जॉर्जिया के शीर्ष चुनाव अधिकारी को फोन करके चुनाव नतीजे पलटने के लिए तक कुछ भी तय नहीं है। कई मामले दर्ज होने के चलते डोनाल्ड ट्रंप की मुश्किलें लगातार बढ़ रही हैं। बता दें कि ट्रंप चार आपराधिक पर्याप्त वोट ढूंढने का निर्देश दिया था लेकिन चुनाव अधिकारी ने ऐसा करने से मना कर दिया था। ट्रंप और उनके 18 सहयोगियों पर जॉर्जिया के रैकेटियरिंग इंफ्लुएंस्ड एंड करप्ट ऑर्गेनाइजेशन एक्ट (रिको) के कथित उल्लंघन का आरोपी बनाया गया है। इस मामले में ट्रंप और उनके सहयोगियों के दोषी पाए जाने पर अधिकतर 20 साल जेल की सजा हो सकती है। बता दें कि रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से डोनाल्ड ट्रंप के अलावा रोन देसांतिस, डग बर्गमैन, पूर्व उपराष्ट्रपति माइक पेंस, निक्की हेले और साउथ कैरोलिना के सीनेटर टिम स्कॉट, विवेक रामास्वामी और न्यूजर्सी के पूर्व गवर्नर क्रिस क्रिस्टी का नाम शामिल है।

चीन ने सैन्य अभ्यास शुरू कर अमेरिका को दी नसीहत, ताइवान ने दिया कड़ा संदेश

बीजिंग। सिमाचार एजेंसी सिन्हुआ के मुताबिक, चीन ने शनिवार को ताइवान के आसपास संयुक्त हवाई और समुद्री गश्त व सैन्य अभ्यास शुरू किया। बीजिंग ने इसे विदेशी तत्वों के साथ ताइवान की मिलीभगत के खिलाफ 'कड़ी चेतावनी' करार दिया है। यह अभ्यास ताइवान के उपराष्ट्रपति विलियम लाई के हाल ही में अमेरिका में 'ठहराव' पर गुस्से की प्रतिक्रिया के रूप में आया था।समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के पूर्वी थिएटर कमांड के प्रवक्ता शी यी के हवाले से कहा कि गश्त और अभ्यास सैन्य जहाजों के समन्वय और वायु व समुद्री क्षेत्रों पर नियंत्रण करने की उनकी क्षमता के प्रशिक्षण से जुड़ा है। शी ने कहा कि वास्तविक युद्ध स्थितियों में लड़ने की सशस्त्र बलों की क्षमता का परीक्षण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि गश्त और अभ्यास विदेशी तत्वों

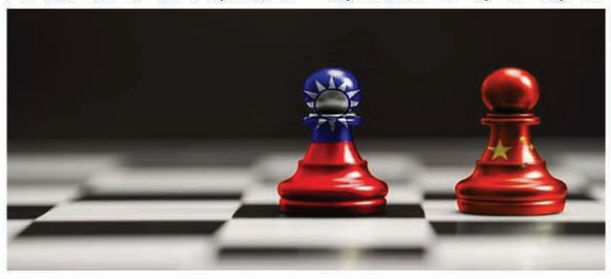

के साथ ताइवान की स्वतंत्रता' के लिए अलगाववादियों की मिलीभगत और उनकी ओर से किए जा रहे उकसावे के लिए एक कड़ी चेतावनी है। दूसरी ओर, ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में द्वीप के पास चीन के नवीनतम सैन्य अभ्यास की निंदा की और इसे 'तर्कहीन भड़काऊ व्यवहार' कहा।मंत्रालय ने यह भी कहा कि वह व्यावहारिक कार्यों के साथ चीन के उनकसाने वाले कदम का जवाब देने के लिए उचित सैनिकों को भेजेगा। ताइवान के राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय ने बताया कि हाल के वर्षों में, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) ने हमें परेशान करने के लिए विमान और जहाज भेजना जारी रखा है, जिससे क्षेत्रीय सुरक्षा को काफी नुकसान हुआ है। बयान में कहा गया है, 'इस बार बहाने से सैन्य अभ्यास शुरू करने से ताइवान जलडमरूमध्य की शांति और स्थिरता में मदद नहीं मिलती है, बल्कि इससे चीन की सैन्यवादी मानसिकता भी उजागर होती है और सैन्य विस्तार की वर्चस्ववादी प्रकृति की पुष्टि करती है'।राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय ने जोर दिया कि कम्युनिस्ट सेना द्वारा बार-बार इस तरह के कृत्य करने के खिलाफ राष्ट्रीय सेना के सभी अधिकारी और सैनिक लड़ने के लिए तैयार हैं। ताइवान ने कहा, हम युद्ध की तैयारी नहीं करते, युद्ध के मौके नहीं खोजते पर युद्ध का जवाब देने और युद्ध से बचने की अपनी मजबूत इच्छाशक्ति को बनाए रखते हैं। हमारे पास अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को सुनिश्चित करने की क्षमता, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास है।÷ ताइवान ने देश के लोगों से इस मामले में ठोस समर्थन करने और एकता बनाए रखने का आह्वान किया। जलडमरूमध्य के दोनों किनारों पर स्थिति गंभीर है। हम सेना और नागरिक रक्षा अभियानों के लिए एक प्रमुख बल बनाने और मातृभूमि की रक्षा करने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। इससे पहले जब लाई ने अमेरिका का दौरा किया था, उस समय भी चीन ने यात्रा की निंदा की थी और 'कड़े कदम' उठाने का संकल्प लिया था। लाइ के अमेरिका में रुकने के बाद देश के विदेश मंत्रालय की ओर से जारी बयान में चीन ने कहा, 'चीन अमेरिका और ताइवान क्षेत्र के बीच किसी भी तरह की आधिकारिक बातचीत का कड़ा विरोध करता है।

सीतारमण ने गांधीनगर में आईएफएससी के कामकाज की समीक्षा की

गांधीनगर/नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को गुजरात के गांधीनगर स्थित गिफ्ट सिटी में भारत के पहले अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (आईएफएससी) के कामकाज की समीक्षा की। वित्त मंत्रालय ने जारी बयान में बताया कि सीतारमण की अध्यक्षता में यहां आईएफएससी के विकास पर वित्त मंत्रालय और कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय के सचिवों की टीम के साथ एक समीक्षा बैठक की गई। इस समीक्षा बैठक में वित्त मंत्री ने गिफ्ट सिटी को एक प्रमुख वित्तीय केंद्र के रूप में उभारने के लिए सभी हितधारकों से पहचाने गए मार्गों को समर्थन करने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि यह वैश्विक स्तर पर अपने समकालीनों के बीच सर्वश्रेष्ठ के रूप में खड़ा हो सके। गुजरात सरकार के सहयोग से गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी (गिफ्ट सिटी) द्वारा आयोजित बैठक में राज्य के वित्त, ऊर्जा और पेट्रोकेमिकल्स मंत्री कनुभाई देसाई, राज्य के मुख्य सचिव और राज्य के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे। इस समीक्षा बैठक में सभी भारतीय वित्तीय क्षेत्र के नियामकों ने भाग लिया। इसके अलावा गुजरात के दौर पर गांधीनगर पर पहुंची वित्त मंत्री ने जी-20 देशों के वित्त एवं स्वास्थ्य मंत्रियों की संयुक्त बैठक में हिस्सा लिया।

उल्लेखनीय है कि गुजरात के गांधीनगर में स्थित इंटरनेशनल फाइनेंस टेक सिटी (गिफ्ट सिटी) भारत का पहला और एकमात्र अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (आईएफएससी) है, जहां बैंकों, स्टॉक एक्सचेंजों और वित्तीय सेवा फर्मों ने अपने वैश्विक परिचालन स्थापित किए हैं।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।